प्रकाशक :
वर्धमान सेवा केन्द्र
सुमंगल प्रकाशन
६८, गुलालवाडी तिसरामाला
बम्बइ–४

मार्गदर्शक : सपादक :
प० पू० गणिवर्य श्री मित्रानन्द विजयजी म. सा.

प्रेरक :
शांतमूर्ति : प० पू० मुनिराज श्री क्षमासागरजी म. सा

मूल्य : २–००

मुद्रक : श्री रामानन्द प्रिन्टिग प्रेस
काकरिया रोड
रायपुर दरवाजा बाहर
अहमदाबाद—२२

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर

अपनी मंगल प्रार्थना

: श्री नवकार महामंत्र :

नमो अरिहंताणं ।
नमो सिद्धाणं ।
नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं ।
नमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मङ्गलम् ॥

卐

चत्तारि मङ्गलं अरिहंता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं साहू मङ्गलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मङ्गलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।

चत्तारि सरणं पवज्जामि अरिहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

श्रीनवपद स्तुति (छन्द : मन्दाक्रान्ता)

रचयिता
पू. पाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय भुवनभानुसूरीश्वरजी म.सा.

श्री अरिहंतो सकलहितदा उच्च पुण्योपकारा ।
सिद्धो सर्वे सुगतिपुरीना गामी ने ध्रुवतारा ॥
आचार्यो छे जिनधरमना दक्ष व्यापारी शूरा ।
उपाध्यायो गणधरतणां सूत्रदाने चकोरा ॥
साधु आंतर अरिसमुहने विक्रमी थइ य दंडे
दर्शनज्ञानं हृदयमळने मोह अन्धार खंडे ॥
चारित्र छे अघरहित हो जिंदगी जीव ठारे ।
नवपदमांहे अनुप तप छे जे समाधि प्रसारे ॥
वन्दु भावे नवपद सदा पामवा आत्मशुद्धि ।
आलम्बन हो मुज हृदयमां द्यो सदा स्वच्छबुद्धि ॥

अरिहंता मे सरण सिद्धा मे सरण साहू मे सरण केवलि-
पन्नत्तो धम्मो मे सरणं ।

卐

शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥
खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ति मे सव्वभूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥

भावार्थ—मै नमस्कार करता हूँ अरिहंतोंको। मै नमस्कार करता हूँ सिद्धोंको। मै नमस्कार करता हूँ आचार्योंको। मै नमस्कार करता हूँ उपाध्यायोंको। मै नमस्कार करता हूँ लोकमें रहे सर्व साधुओंको। यह पांचोंको किया नमस्कार समस्त रागादि पापों (या पापकर्मों) का अत्यन्त नाशक है। सर्व मंगलोंमें श्रेष्ठ मंगल है।

सूत्र परिचय–इस सूत्रके द्वारा अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा साधु इन पंच परमेष्ठिओंको नमस्कार किया जाता है अत एव यह 'पंचपरमेष्ठि नमस्कार' अथवा 'नमस्कार महामंत्र' नाम से पहचाना जाता है। शास्त्रोंमें 'पंचमंगल' अथवा पंचमंगलमहाश्रुतस्कन्ध नामसे भी परिचय कराया जाता है। इस महामंत्रका स्मरणकरनेसे सर्वश्रेष्ठ मंगल होता है, त्रिलोका, अशुभ कर्मोंका नाश होता है।

२ पंचिंदिय (गुरुस्तुति–गुरुस्थापना) सूत्र

पंचिंदियसंवरणो तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो, चउ-
व्विह कसायमुक्को इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ॥
पंचमहव्वयजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो,
पंचसमिओ तिगुत्तो छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

अतः जहाँ गुरुमहाराजका योग न हो वहाँ स्थापनामुद्रासे नवकार व यह पंचिंदियसूत्र बोलकर पुस्तक, मालादि द्वारा गुरु स्थापना की जाती है। इस सूत्रमें अपने गुरुमहाराजका स्वरुप बताया गया है

३ स्तोभवंदनसूत्र—खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि ॥

शब्दार्थ

इच्छामि—मैं इच्छता हूँ।
खमासमणो—हे क्षमाश्रमण!।
वंदिउ—वंदन करनेके लीये।
जावणिज्जाए — मय शक्ति लगाकर।
निसीहियाए—व दोष त्याग कर।
मत्थएण वंदामि—मस्तक नमाकर मै वंदन करता हूँ।

भावार्थः—मै इच्छाता हूँ। हे क्षमाश्रमण! वंदन करने के लीये, मय शक्ति लगाकर व दोष त्यागकर, मस्तक नमाकर मैं वंदन करता हूँ।

सूत्रपरिचय—यह सूत्र श्रीतीर्थंकर भगवानको और गुरु महाराजको वंदन करते समय बोला जाता है।

४ सुगुरु सुखशाता पृच्छा—इच्छकार सूत्र

इच्छकार सुहराइ? सुहदेवसि? सुखतप?

गुरु म० उसका जवाब देते हैं कि 'वर्तमान जोग' अर्थात् जैसी उस समयकी अनुकूलता।

सूत्रपरिचय–त्यागी गुरुमहाराजको सुखशाता पूछनेके लिए इस सूत्रका उपयोग है। गुरुमहाराजसे रात्रि (दिन) तप, शरीर, संयम और शाताके विषयमें प्रश्न पूछे जाते है। गुरुम. उसका प्रत्युत्तर देते है और शिष्य आहारपानी आदि संयमोपकारक वस्तुओंका लाभ देनेके लिये विनंती करता है। गुरु म० वर्तमान जोग कहकर उत्तर देते है।

५ अब्भुट्ठिओमि सूत्र

(शिष्य) ईच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइयं (देवसियं) खामेउं? (गुरु म.) खामेह

(शिष्य) इच्छं, खामेमि राइयं (देवसियं)

जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे, विणये –वेयावच्चे, आलावे–संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामिदुक्कडं॥

शब्दार्थ

इच्छाकारेण-आपकी इच्छासे।
संदिसह-आदेश दे।
भगवन्-हे भगवन् (गुरुदेव)
अब्भुट्ठिओमि-मैं उपस्थित हुआ हूँ।

वेयावच्चे-सेवामें।
आलावे-एक बार बोलनेमें।
संलावे-अनेक बार बोलनेमें।
उच्चासणे-आपसे ऊंचे आ-सनमें।

मकडा संताणा–मकड़ी के जाले ।
संकमणे–दबानेसे ।
जे मे जीवा–मुझसे जो जीव ।
विराहिया–दुःखित हुए ।
एगिंदिया–एक इन्द्रियवाले ।
बेइंदिया–दो इन्द्रियवाले ।
तेइंदिया–तीन इन्द्रियवाले ।
चउरिंदिया–चार इन्द्रियवाले ।
पंचिंदिया–पांच इन्द्रियवाले ।
अभिहया–हाथ पैरसे टुकराए ।
वत्तिया–धूलसे ढके या–उठाये ।
लेसिया–भूमि आदि पर घसीटे ।
संघाइया–परस्पर गात्रोसे एकत्र किये ।
संघट्टिया–स्पर्श किया ।
परियाविया–संताप–पीड़ा दी ।
किलामिया–अंगभंग किया ।
उद्दविया–मृत्यु जैसा दुःख दिया ।
ठाणाओ ठाणं–एक स्थानसे दुसरे स्थानपर
संकामिया–हटाये
जीवियाओ ववरोविया–प्राण से रहित किये
तस्स–उसका
मिच्छा–मिथ्या (हो)
मि–मेरा ।
दुक्कडं–दुष्कृत ।

भावार्थः–हे भगवन् ! आपकी इच्छासे मुझे आदेश दे ताकि मैं इर्यापथिकी–गमनागमन में व माध्वाचार में हुए विराधनाका प्रतिक्रमण करु ।

यहाँ गुरु म. 'प्रतिक्रमण करो' कहकर आदेश–आज्ञा देते है । इच्छं कहकर शिष्य आज्ञाका स्वीकार करता है और मिथ्या-

शब्दार्थः

तस्स—उसका (जिस अति-चार—दोपका मैने पहले प्रति-क्रमण किया)।

उत्तरीकरणेणं=विशेप शुद्धि के लिये।

पायच्छित्तकरणेणं=प्रायश्चित्त करने के लिये।

विसल्लीकरणेणं=शल्य हटाने के लिये।

पावाणं कम्माणं=पापकर्मका।

निग्घायणट्ठाए=उच्छेद-नाश करने के लिये।

ठामि काउस्सग्गं=मै कायोत्सर्ग में रहता हूँ।

भावार्थः जिस अतिचारका—दोपका मैने पहले 'मिथ्यादुष्कृत दिया, आलोचना व प्रतिक्रमण किया उसकी विशेप शुद्धि के लिये कायोत्सर्ग करने द्वारा, वह भी प्रायश्चित्त करने द्वारा, वह भी अति-चार नाश से निर्मलता करने द्वारा और वह भी मायादि शल्य हटाने द्वारा ससारके हेतुभूत ज्ञानावरणीयादि पापकर्मोका उच्छेद—नाश करने के लिए मै कायोत्सर्गमें रहता हूं।

सूत्रपरिचयः इरियावहियं सूत्रद्वारा मिच्छामिदुक्कडं रूप प्रतिक्रमण से पापकी सामान्यशुद्धि होती है विशेपशुद्धि कायोत्सर्ग से होती है। उसमें अन्तर्गत चार क्रिया का सूचक यह सूत्र है।

८ अन्नत्थ सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीये पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

भगवंताणं—भगवंतको।
नमुक्कारेण—'नमोअरिहंताणं' बोलकर अरिहंत भगवान को नमस्कार करके।
न पारेमि—पूर्ण करके न छोडूं
ताव—वहाँ तक।
कायं—शरीरको।
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं—स्थिरता, मौन और ध्यान रखकर।
अप्पाणं—अपने आत्माको।
वोसिरामि—वोसिराता (मौन व ध्यान के साथ खडो अवस्था में छोड देता हूँ

भावार्थः—श्वासलेना, श्वास छोड़ना, खासी आना, छींक आना, जम्हाइ आना, डकार आना, अधोवायु छूटना, चक्कर आना, पित्तविकारसे मूर्छा आना, सूक्ष्म अङ्गसचार होना, सूक्ष्म कफसचार होना, सूक्ष्म दृष्टिसचार होना उससे और अग्नि-स्पर्शादि कारण उपस्थित होने से जो कायव्यापार हो उससे मेरा कायोत्सर्ग भग्न और खंडित न हो इसलिये उपर्युक्त कायव्यापार का अपवाद रखकर जहाँ तक अरिहंत भगवान को 'नमो अरिहंताणं' बोलकर कायोत्सर्ग पूरा न करु वहाँ तक स्थिरता, मौन और ध्यान रखकर अपनी कायाको—आत्माको वोसिराता हूँ।

सूत्रपरिचयः इस सूत्रमें कायोत्सर्ग के आगार—अपवाद बताये गये हैं और कायोत्सर्ग की समयमर्यादा, स्वरूप और प्रतिज्ञा प्रदर्शित की है।

९. लोगस्स सूत्र (चतुर्विंशति-स्तव)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं चउविसंपि केवली

॥१॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सिअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठ नेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउविसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयास-यरा सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

शब्दार्थः

लोगस्स–[illegible]

उज्जोअगरे–[illegible]

धम्मतित्थयरे–[illegible]

अरिहंते–[illegible]

चउविसंपि–[illegible]

केवली–[illegible]

उसभं—ऋषभदेव ।
अजियं च—अजितनाथको ।
वंदे—वन्दना करता हूँ ।
संभवं—सम्भवनाथको ।
अभिणंदणं च—और अभि-
नन्दन स्वामीको ।
सुमइं च—और सुमतिनाथको।
पउमप्पहं—पद्मप्रभस्वामीको ।
सुपासं—सुपार्श्वनाथको ।
जिणं च—और जिनको ।
चंदप्पहं—चन्द्रप्रभस्वामीको ।
सुविहिं च—और सुविधिनाथको
पुप्फदंतं—यानी पुष्पदन्तको ।
सीअलसिज्जंस वासुपुज्ज च—
शीतलनाथ श्रेयांसनाथ-
और वासुपूज्यप्रभुको ।
विमलं—विमलनाथको ।
अणंत च—और अनन्तनाथको ।
जिणं--जिनको
धम्म—धर्मनाथको
संतिं च—और शान्तिनाथको
वंदामि—वन्दना करता हूँ ।

कुंथुं—कुंथुनाथको ।
अरं च—और अरनाथको ।
मल्लिं—मल्लिनाथको ।
मुणिसुव्वय—मुनिसुव्रत
स्वामीको ।
नमिजिणं च—और नमिनाथ-
को ।
रिट्ठनेमिं—अरिष्टनेमिनाथको ।
पासं तह—तथा पार्श्वनाथको ।
वद्धमाण च—और वर्धमान-
महावीर प्रभुको ।
एवं मए—इस प्रकार मुझ से ।
अभिथुआ—स्तुति किये गये ।
विहुयरयमला—कर्मरज-रागादि।
मल दूर किये हुए
पहीणजरमरणा—वृद्धावस्था-
व मरण से मुक्त
चउविसंपि—चौबीस भी ।
जिणवरा—जिनवर ।
तित्थयरा—धर्मशासन स्थापक
मे—मेरे पर ।

श्री चन्द्रप्रभस्वामी को वंदन करता हूँ इस प्रकार दूसरी गाथा में पहले आठ तीर्थंकर भगवान को नमस्कार किया ॥२॥

श्री सुविधिनाथ याने पुष्पदन्त स्वामी को, श्री शीतलनाथ-स्वामी को, श्री श्रेयांसनाथ को, श्री वासुपूज्य स्वामी को, श्री विमलनाथ को, श्री अनन्तनाथ को, श्री धर्मनाथ को व श्री शांतिनाथ को वंदन करता हूँ ॥३॥

श्री कुंथुनाथ को, श्री अरनाथ को, श्री मल्लिनाथ को, श्री मुनिसुव्रतस्वामी को, श्री नमिनाथ को, श्री नेमनाथ को, श्री पार्श्व नाथ को और श्री वर्धमान स्वामी को (श्री महावीर स्वामी) को वंदन करता हूँ ॥४॥

इस प्रकार मुझसे जिनकी स्तवना की गई, वे कर्मरज और रागादिमल को दूर करनेवाले वृद्धावस्था व मृत्यु से मुक्त (यानी निर्मल अक्षय चौवीस भी) अर्थात् अन्य अनन्त जिनवरों के उपरांत २४) जिनवर धर्म–शासन के स्थापक मुझ पर अनुग्रह करें ॥५॥

जिनोंका कीर्तन वन्दन व पूजन किया व जो लोकमें श्रेष्ठ सिद्ध है वे भाव आरोग्य (मोक्ष) के लिए (या आरोग्य व) बोधिलाभ एवं उत्तम भावसमाधि दें ॥६॥

चंद्रो से अधिक निर्मल, सूर्यों से अधिक प्रकाशकर, समुद्रसे उत्तम गाम्भीर्यवाले (उत्कृष्ट सागर स्वयंभूरमण जैसे गम्भीर) सिद्ध (यानी कर्मयुक्त सिद्ध भगवंत) मुझे मोक्ष दें ॥७॥

सूत्रपरिचय:— इस सूत्र में चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति की गई है, इसलिए यह सूत्र 'चतुर्विंशतिस्तव' नाम से प्रसिद्ध

मणेण–मनसे ।
वायाए–वाणीसे
काएणं–शरीरसे ।
न करेमि–न करुंगा ।
न कारवेमि–न कराऊंगा ।
तस्स–उस पाप वृत्तिका ।
भंते–हे भगवन् !
पडिक्कमामि–प्रतिक्रमण
करता हूँ, निवृत्त हो जाता है
निंदामि–निंदा करता हूँ ।
गरिहामि–गुरु महाराज के
समक्ष निंदा करता हूँ ।
अप्पाणं–पापवाली मलीन
आत्माको ।
वोसिरामि–छोड देता हूँ ।

भावार्थः— हे भगवन्त ! मैं सामायिक करता हूँ पापवाली प्रवृत्ति का प्रतिज्ञाबद्ध होकर त्याग करता हूँ। जब तक मै इस (दो घड़ीके) नियम का सेवन करु तब तक मन वचन काया से सावद्य पापवाळी प्रवृति न करुंगा, न कराऊंगा। हे भगवंत अभीतक किये सावद्यका प्रतिक्रमण करता हूँ। गर्हा करता हूँ। पापवाली मलीन आत्माका त्याग करता हूँ।

११ सामाइयवयजुत्तो सूत्र

सामाइय वयजुत्तो जाव मणे होइ नियम संजुत्तो। छिन्नइ असुहं कम्मं सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥

सामाइयंमि उ कए समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

पर तो श्रावक साधु जैसा होता है इसलीये उसे अनेक बार सामायिक करना चाहिये ।

सूत्र परिचय :—सामायिक की प्रतिज्ञा इस सूत्र द्वारा पूर्ण करने में आती है । फिर भी सामायिक करने की भावना हो इसलीये सामायिक के लाभ प्रदर्शित कीये है । उसके साथ सामायिक ३२ दोष से रहित होना चाहिये यह बात बतलाइ है ।

सामायिक लेने की विधि :—शरीर वस्त्र और उपकरण की शुद्धि पूर्वक सामायिक करने के लिये तैयार हुआ श्रावक भूमि प्रमार्जन करके सद्गुरुके पास सामायिक करे । गुरु म. का योग न हो तो बाजठ, सापडा आदि उच्च स्थान पर धार्मिक पुस्तक या माला आदि रखकर स्थापनामुद्रा से श्री नवकार मंत्र और पंचिंदियसूत्र बोलकर गुरु म० की स्थापना करना । बादमें खड़े होकर खमासमण पूर्वक इरियावहियं–तस्स उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र बोलकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना उपर लोगस्स बोलकर खमासमण देना । इच्छाकारेण सँदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं यह आदेश मागकर मुहपत्तिका पडिलेहण करना । बाद में खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? इच्छं दूसरा खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं ? इच्छं ये दो आदेश मागकर हाथ जोडकर एक नवकारमंत्र गिनने के बाद इच्छा-कारी भगवन् पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी बोलना बादमें गुरु महाराज अथवा कोई बडेरा होवे तो उसके पास करेमिभंते सूत्र सुनना, न हो स्वयं बोल लेना । बाद एक एक

जगरक्खण ! जगबंधव ! जगसत्थवाह ! जगभाव वियक्खण ! अट्ठावय-संठवियरूव ! कम्मट्ठविणासण चउविसं पि जिणवर जयंतु अप्पडिहय-सासण ॥१॥

कम्मभूमिहि कम्मभूमिहिं पढणसंघयणि उक्कोसय सत्तरिसय जिनवगण विहरंत लब्भइ । नव कोडिहिं केवलिण कोडिसहस्स नवसाहु गम्मइ संपइ जिणवर वीस, मुणि बिहु कोडिहिं वरनाण, समणह कोडि सहस्स दुअ थुणिज्जइ निच्चविहाणि ॥२॥

जयउ सामिय ! जयउ सामिय । रिसह ! सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण ! जयउ वीर ! सच्चउरि-मंडण ! भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय ! महुरि पास ! दुहदुरिअ खंडण ॥३॥

अवरविदेहिं तित्थयरा चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि । तीयाणागय संपइअ वंदु जिण सव्वे वि ॥४॥

सत्ताणवइ सहस्सा लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडिओ । बत्तीसय बासियाइं तिय लोए चेइए वंदे ॥५॥

कोडिहिं—क्रोड ।

वरनाण—केवलज्ञानी ।

समणह—श्रमणों को (संख्या ।

कोडि सहस्स दुअ—दो हजार क्रोड

थुणिज्जइ—स्तुति की जाती है ।

निच्च—नित्य ।

विहाणि—प्रात:काल में ।

जयउ—जय हो ।

सामिय—हे स्वामिन् ।

रिसह—श्रीऋषभदेव ।

सत्तुंजि—शत्रुंजय पर ।

उज्जिंति—गिरनार पर्वत पर ।

पहुनेमिजिण—हे प्रभो नेमिजिन ।

जयउ-जय हो ।

वीर—हे महावीर प्रभो !

भरुअच्छहिंमुणिसुव्वय-भरूच में हे मुनिसुव्रतजिन !

महुरिपास—मथुरा में हे पार्श्वनाथ ।

दुहदुरिअखंडण—दुःख व पाप का नाश करने वाले ।

अवर—अन्य दूसरे ।

विदेहि—महाविदेह में ।

तित्थयरा—तीर्थंकर

चिहुं—चारों

दिसिविदिसि—दिशाओं और विदिशाओंमें ।

जिं—जो ।

केवि—कोइ भी ।

तीयणागय-संपइअ—भूतभविष्य और वर्तमान काल के ।

वंदु—मैं वंदन करता हूँ ।

जिण—जिनो को ।

सव्वेवि—सभी को ।

सत्ताणवइ--सत्ताणवे ।

सहस्सा—हजार ।

लक्खाछप्पन्न-छप्पन लाख ।

अट्ठकोडीओ--आठ क्रोड ।

बत्तीसय--बत्तीस सौ ।

बासीयाइं--बयासी ।

तिअलोए—तीनों लोक में ।

धम्मनायगाणं—धर्मके नायक —स्वयं धर्म कर ओगेको धर्ममें चलानेवालोंको ।

धम्मसारहीणं—धर्मके सारथि को ।

धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं—धर्मरूपी चार गति का अन्त करनेवाला जो श्रेष्ठ धर्म चक्र उसको धारण करने वालों को ।

अप्पडिहय—वरनाणदंसण-धराणं—कभी नष्ट न हो ऐसे अबाधित श्रेष्ठ केवलज्ञान केवलदर्शन धारण करने वालों को ।

वियट्टछउमाणं—छद्म—(चार घातीकर्म) क्षय करनेवाले को ।

जिणाणं जावयाणं—रागद्वेषको जितनेवाले जितानेवाले को ।

तिण्णाण तारयाणं—अज्ञान सागर से तैरनेवाले तिरानेवाले को ।

बुद्धाणं बोहयाणं—पूर्ण बोध पानेवाले प्राप्त करानेवाले को

लोग—पईवाणं—सज्ञिलोक के प्रदीप रूप को ।

लोग—पज्जोअगराणं—उत्कृष्ट १४ पूर्वधर लोगों के लिए उत्कृष्ट प्रकाशकर को ।

अभय—दयाणं—अभय—चित्त स्वास्थ्य देनेवालों को ।

चक्खु—दयाणं—नेत्र प्रदान करनेवालों को, धर्मदृष्टि-धर्म आकर्षण देने वालों को ।

मुत्ताणं मोअगाणं—मुक्त हुए, मुक्त करानेवाले को ।

सव्वण्णूणं सव्वदरिसिण—सर्वज्ञ सर्वदर्शी को ।

सिवं—उपद्रवों से रहित ।

जो सकल भव्य लोक में उत्तम है। लोक के–चरमावर्त प्राप्त जीवों के नाथ है। पंचास्तिकाय लोक के हितकारी हैं, प्रभुसे ज्ञान प्राप्त सज्ञी लोगो के लिए प्रदीप हैं, और उत्कृष्ट १४ पूर्व धर–गणधरलोकको प्रकाशकरने वाले है ॥४॥

जो अभय देनेवाले है, श्रद्धारूपी नेत्रोका दान करनेवाले हैं, मार्ग–अवक्रचित्त देने वाले हैं शरण देनेवाले हैं और बोधि बीजका लाभ देनेवाले है ॥५॥

जो चरित्रधर्म देनेवाले हैं, धर्म की देशना देनेवाले हैं, धर्म के सच्चे स्वामी है, धर्मरूपी रथ को चलाने में निपुण सारथि हैं तथा चारगतिका नाश करनेवाले धर्मचक्र के प्रवर्त्तक चक्रवर्ती है ॥६॥

जो नष्ट नहीं हो ऐसे केवलज्ञान एवं केवलदर्शन को धारण करने वाले हैं तथा छद्म–घातीकर्म का नाश करनेवाले है ॥७॥

जो स्वयं जिन बने हुए हैं और दूसरो को भी जिन बनाने वाले हैं, जो ससारसमुद्र से पार हो गये हैं और दूसरों को भी पार पहुँचानेवाले हैं, जो स्वयं पूर्णबोध प्राप्त है तथा दूसरोको भी बोध देने वाले हैं, जो मुक्त हैं, तथा दूसरों को मुक्ति दिलाने वाले है ॥८॥

जो सर्वज्ञ और सर्वदर्शी हैं तथा शिव, स्थिर, व्याधि और वेदना से रहित, अनन्त, अक्षय, अव्याबाध, और अपुनरावृत्ति, अर्थात जहाँ जाने के बाद ससार में वापस आना नहीं रहता, ऐसे सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त किये हुए है, इन भय जीतने वाले जिनों को नमस्कार हो ॥९॥

शब्दार्थ

जावंत के वि–जितने भी।
साहू–साधु।
भरहेरवय–महाविदेहे--भरत, ऐरवत और महाविदेह क्षेत्र में।
सव्वेसिं तेसिं–उन सबको।
पणओ–नमन करता हूँ।
तिविहेण–करना, कराना और अनुमोदन करना इन तीन प्रकार से।
तिदंड-विरयाणं–जो तीन दंड से विराम पाये हुए हैं, उनको
तिदंड=मनसे। पाप करना वह मनोदण्ड वचन से पाप करना वह वचन दण्ड और काया से पाप करना वह कायदण्ड।

भावार्थः—भरत, ऐरवत और महाविदेह क्षेत्रमें स्थित जितने भी साधु मन, वचन, और काया से पाप प्रवृत्ति करते नहीं कराते नहीं साथ हो करते हुए का अनुमोद नहीं करते, उनको मैं नमन करता हूं।

१७ नमोऽर्हत्–सूत्र

नमोऽर्हत्सिद्धाऽऽचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

शब्दार्थ

नमो–नमस्कार हो। अर्हत्–सिद्धाऽऽचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्यः–अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा सर्व साधुओं को।

भावार्थः--अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्व-साधुओं को नमस्कार हो।

१८ उवसग्गहरं सूत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण मुक्कं। विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह रोग मारी दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

शब्दार्थ

उवसग्गहरं—[illegible]

[illegible]

पासं [illegible] तीर्थंकर, श्री
[illegible]नाथ भगवान को।
वंदामि-मैं वन्दना करता हूँ।
कम्म घणमुक्कं-कर्मसमुह से
मुक्त।
विसहर-विस-निन्नासं-सर्प
के विष का नाश करने
वाले, मिथ्यात्व आदि
दोषों को दूर करने वाले
मंगल-कल्लाण-आवासं-मंगल
और कल्याण के गृह-
रूप।
विसहर-फुलिंग मंतं-'विसहर
फुलिंग' नामक मन्त्र को।
कंठे धारेइ-कण्ठ में धारण
करता है, स्मरण करता
है।
जो-जो
सया-नित्य
मणुओ-मनुष्य।
[illegible]

गह-रोग-मारी दुट्ठजरा-
महारोग, मारण प्र
अथवा महामारी अ
उत्पात, तथा वि
ज्वर।
जंति-हो जाते हैं।
उवसाम-शान्त।
चिट्ठउ-रहो।
दूरे-दूर।
मंतो-(यह) मन्त्र।
तुज्झ-आपको किया हुआ
पणामो-प्रणाम। वि-ही।
बहुफलो-बहुत फल देने
वाला।
होइ-होता है।
नरतिरियेसु-मनुष्य (गति)
और तिर्यंच गति में।
वि-भी।
जीवा-जीव
पावंति-प्राप्त करते हैं।
न-नहीं।

दुक्ख-दोगच्चं-दुःख तथा भाव दुर्दशाको ।

तुह-आपके

सम्मत्ते लद्धे-सम्यग् दर्शनकी प्राप्ति होने पर ।

चिंतामणि-कप्प पायव-ब्भ-हिए-चिंतामणीरत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक ।

पावंति-प्राप्त करते है ।

अविग्घेणं-सरलता से ।

जीवा-जीव ।

अयरामरं ठाणं--अजरामर स्थान को ।

इअ-इस प्रकार ।

संथुओ-स्तुति की है ।

महायस-महा यशस्विन् ।

भत्ति-ब्भर-निब्भरेण-भक्ति से भरपूर ।

हिअएण-हृदय से ।

ता-अत एव ।

देव-हे देव ।।

दिज्ज-प्रदान करो ।

बोहिं-बोधि, सम्यक्त्व ।

भवे भवे-प्रत्येक भव में ।

पास-जिणचंद-हे पार्श्वजिन चन्द ! जिनेश्वरों में चन्द्र समान पार्श्वनाथ !

भावार्थः— उपद्रवों को दूर करने वाला पार्श्वयक्ष है जिसको अथवा समीप है, ऐसे कर्म-समूह से मुक्त जिसका नाम-स्मरण सर्प के विष का नाश करता है, तथा मिथ्यात्व आदि को दूर करता है और जो मंगल एवं कल्याण के आवास है, ऐसे श्री पार्श्वनाथ को मैं वन्दन करता हूँ ।।१।।

(श्री पार्श्वनाथ प्रभू के नाम से युक्त) विसहर-फुलिंग नामक मंत्र को जो मनुष्य नित्य स्मरण करता है, उसके दुष्ट ग्रह, महा-रोग, मारण-प्रयोग अथवा महामारि आदि उत्पात और दुष्टज्वर शांत हो जाता है ।।२।।

पासं-तेइसवें तीर्थंकर, श्री पार्श्वनाथ भगवान को।

वंदामि–मैं वन्दना करता हूँ।

कम्म घणमुक्कं--कर्मसमुह से मुक्त ।

विसहर–विस–निन्नासं–सर्प के विष का नाश करने वाले, मिथ्यात्व आदि दोषों को दूर करने वाले

मंगल-कल्लाण-आवासं-मंगल और कल्याण के गृह-रूप ।

विसहर–फुल्लिंग मंतं-'विसहर फुल्लिंग' नामक मन्त्र को।

कंठे धारेइ–कण्ठ में धारण करता है, स्मरण करता है।

जो-जो

सया–नित्य

मणुओ–मनुष्य।

तस्स–उसके ।

गह-रोग–मारी दुट्ठजरा-ग्रह, महारोग, मारण प्रयोग अथवा महामारी आदि उत्पात, तथा विषम ज्वर ।

जंति–हो जाते हैं।

उवसाम–शान्त ।

चिट्ठउ–रहो ।

दूरे–दूर ।

मंतो-(यह) मन्त्र ।

तुज्झ–आपको किया हुआ ।

पणामो–प्रणाम । वि–ही।

बहुफलो–बहुत फल देने वाला ।

होइ–होता है।

नरतिरियेसु–मनुष्य (गति) और तिर्यंच गति में ।

वि–भी।

जीवा–जीव

पावंति–प्राप्त करते हैं।

न–नहीं।

दुक्ख–दोगच्चं–दुःख तथा भाव दुर्दशाको ।
तुह–आपके
सम्मत्ते लद्धे–सम्यग् दर्शनकी प्राप्ति होने पर ।
चिंतामणि–कप्प पायव-ब्भ-हिए–चिंतामणीरत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक ।
पावंति–प्राप्त करते है ।
अविग्घेणं–सरलता से ।
जीवा–जीव ।
अयरामरं ठाणं–अजरामर स्थान को ।
इअ–इस प्रकार ।
संथुओ–स्तुति की है ।
महायस–महा यशस्विन् ।
भत्ति-ब्भर-निब्भरेण–भक्ति से भरपूर ।
हिअएण–हृदय से ।
ता–अत एव ।
देव–हे देव ! ।
दिज्ज–प्रदान करो ।
बोहिं–बोधि, सम्यक्त्व ।
भवे भवे–प्रत्येक भव में ।
पास–जिणचंद–हे पार्श्वजिन चन्द्र ! जिनेश्वरों में चन्द्र समान पार्श्वनाथ !

भावार्थः— उपद्रवों को दूर करने वाला पार्श्वयक्ष है जिसको अथवा समीप है, ऐसे कर्म-समूह से मुक्त जिसका नाम-स्मरण सर्प के विष का नाश करता है, तथा मिथ्यात्व आदि को दूर करता है और जो मंगल एवं कल्याण के आवास है, ऐसे श्री पार्श्वनाथ को मैं वन्दन करता हूँ ॥१॥

(श्री पार्श्वनाथ प्रभू के नाम से युक्त) विसहर–फुलिंग नामक मंत्र को जो मनुष्य नित्य स्मरण करता है, उसके दुष्ट ग्रह, महा-रोग, मारण–प्रयोग अथवा महामारि आदि उत्पात और दुष्टज्वर शांत हो जाता हैं ॥२॥

यह मन्त्र तो दूर रहो, हे पार्श्वनाथ प्रभु ! आपको किया हुआ प्रणाम भी बहुत फल देनेवाला होता है । उसके द्वारा मनुष्य और तिर्यञ्च गति में स्थित जीव किसी भी प्रकार के दुःख तथा दुर्दशा को नहीं प्राप्त करते हैं ॥३॥

चिन्तामणि–रत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक शक्ति धारण करने वाले आपके सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर जीव सरलता से मुक्तिपद को प्राप्त करते हैं ॥४॥

मैने इस प्रकार भक्ति से भरपूर हृदय से आपकी स्तुति की है अतः हे देव ! हे महायशस्विन् ! हे पार्श्वजिनचन्द्र ! मुझे प्रत्येक भव में अपनी बोधि–अपना सम्यक्त्व प्रदान करो ॥५॥

१९ जय वीयराय (प्रणिधान) सूत्र

जय वीयराय ! जगगुरु होउ ममं तुह प-भावओ भयवं ! भव–निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोग–विरुद्ध–च्चाओ, गुरु-जणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि नियाणबंधणं वीयराय ! तुह समये । तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहि-

लाभो अ। संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमङ्गलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

शब्दार्थ

जय—आपकी जयहो ।
वीयराय!—हे वीतराग प्रभो!
जगगुरु—हे जगद्गुरो !
होउ—हो
ममं—मुझे ।
तुह—आपके ;
प्रभावओ—प्रभावसे ।
भयवं ! — हे भगवन् !
भव-निव्वेओ— ससार के प्रति वैराग्य ।
मग्गाणुसारिआ—मोक्ष मार्ग में चलने की शक्ति
इट्ठफल—सिद्धि— इष्ट फल की सिद्धि ।
लोग—विरुद्ध—च्चाओ— लोक में निन्दा हो ऐसी प्रवृत्ति का त्याग ।
गुरुजन—पूआ—धर्माचार्य तथा माता-पितादि बड़े व्यक्तियो के प्रति परिपूर्ण आदर भाव—सेवा ।
परत्थकरण—दूसरों का भला करने की तत्परता ।
च—और
सुहगुरु—जोगो— सद्गुरु का योग ।
तव्वयण—सेवणा— उनकी आज्ञानुसार चलने की शक्ति ।
आभवं—जहा तक समार में परिभ्रमण करना पडे वहां तक ।

अखंडा–अखण्ड रीति से ।
वारिज्जइ निषेध किया है ।
जइ वि–यद्यपि ।
नियाण–बन्धणं-आशंसा–फल की याचना ।
वियराय–हे वीतराग !
तुह–आपके ।
समये–शास्त्र में, प्रवचन में ।
तहवि–तथापि ।
मम–मुझे
हुज्ज–प्राप्त हो ।
सेवा–उपासना ।
भवे-भवे–प्रत्येक भव में ।
तुम्ह–आपके ।
चलणाणं–चरणों की ।
दुक्ख-खओ–दुःख का नाश ।
कम्म-खओ-कर्म का नाश ।
समाहि-मरणं–शान्ति पूर्वक मरण ।
च–और ।

बोहिलाभो – बोधि लाभ, सम्यक्त्व की प्राप्ति ।
अ–और ।
संपज्जउ–प्राप्त हो ।
मह–मुझे ।
एअं-यह ।
तुह–आपको ।
नाह !– हे नाथ !
पणामकरणेणं–प्रणाम करने से ।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं– सर्व मङ्गलों में मङ्गलरूप ।
सर्व कल्याण कारणं – सर्व कल्याणों का कारण ।
प्रधान -श्रेष्ठ ।
सर्वधर्माणां–सर्व धर्मों में ।
जैन–जैन ।
जयति–विजयी है, जय को प्राप्त हो रहा है ।
शासनम्–शासन ।

भावार्थः— हे वीतराग ! हे जगद्गुरु ! आपकी जय हो । हे भगवन् ! आपके सामर्थ्य से मुझे संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न

हो, मोक्षमार्ग में चलने की शक्ति प्राप्त हो और इष्ट–फल की सिद्धि हो (जिससे मै धर्म का आराधन सरलता से कर सकूँगा।।१।।

हे प्रभो ! (मुझे ऐसा सामर्थ्य प्राप्त हो कि जिससे मेरा मन लोकनिन्दा हो ऐसा कोई भी कार्य करने को प्रवृत्त न हो, धर्माचार्य तथा मातापितादि बडे व्यक्तियों के प्रति पूर्ण आदर–भाव से सेवा और दूसरे का भला करने को तत्पर बनुं । हे प्रभो ! मुझे सद्‌गुरु का योग मिले, तथा उनकी आज्ञानुसार चलने की शक्ति प्राप्त हो । यह सब जहां तक मुझे संसार में परिभ्रमण करना पडे वहां तक अखण्ड रीति से प्राप्त हो ॥२॥

हे वीतराग ! आपके प्रवचन में आगमों में यद्यपि निदान–बन्धन अर्थात् फल की याचना का निषेध है , तथापि मैं ऐसी इच्छा करता हूँ कि प्रत्येक भव में आपके चरणों की उपासना करने का योग मुझे प्राप्त हो ॥३॥

हे नाथ ! आपको प्रणाम करने से दुःख का नाश हो, कर्म का नाश हो, सम्यक्त्व (जैनधर्म) मिले और शान्तिपूर्वक मरण हो ऐसी स्थिति प्राप्त हो ॥४॥

सर्व मङ्गलों मे मङ्गलरूप सर्व कल्याणों का कारण और सर्व धर्मों में श्रेष्ठ ऐसा जैनशासन जय को प्राप्त हो रहा है ॥५॥

२० अरिहंत चेइयाणं (चैत्यस्तव) सूत्र

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं॥ वंदण

भावार्थः— श्री अरिहंत परमात्मा की प्रतिमाओं के मन वचन काया से वन्दन हेतु, पुष्पादि से पूजन हेतु, वस्त्रादि से सत्कार हेतु, स्तोत्रादि से सन्मान हेतु एवं सम्यक्त्व हेतु मैं कायोत्सर्ग करता हूँ।

यह कायोत्सर्ग भी शर्म या बलात्कार से नहीं लेकिन बढती हुइ तत्त्वप्रतीति से, जडता से नहीं लेकिन शास्त्रप्रज्ञा से, रागादि की व्याकुलता से नहीं लेकिन चित्त समाधि से, शून्य चित्त से नहीं लेकिन उपयोग की दृढता से और तत्त्वार्थ चिंतन से —इन साधनो से करता हूँ।

सूत्रपरिचयः— भव्यात्माओ द्वारा अर्हद्बिंबो का जो वन्दनपूजन हो रहा है उसका अनुमोदना द्वारा लाभ पाने के लिये और सम्यक्त्व एवं मोक्ष का लाभ पाने के लिये जो कायोत्सर्ग किया जाता है उसके लिये यह सूत्र बोला जाता है। इस सूत्र के प्रथम विभाग में जिन ६ प्रयोजनों से कायोत्सर्ग किया जाता है उन प्रयोजनों (निमित्त) को बताया गया है। दूसरे विभाग में कायोत्सर्ग के ५ साधन जिनको कायोत्सर्ग में जुटाया जाता है। उन साधनों का निर्देश है।

चैत्यवंदनकी विधि

प्रथम तीन 'खमासमण' देना, फिर बाँया घुटना खडा रख-कर उत्तरासन डालकर दोनों हाथ जोड 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? इच्छं' कहकर—

सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्तमेघो,
दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ।
भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः ॥

यह स्तुति बोलना। बादमें पूर्वाचार्यकृत कोइ भी चैत्यवन्दन कहना। बाद 'जंकिंचि'–'नमुत्थुणं'-'जावंति चेइयाइं' सूत्र कह-कर खमासमण देना। बाद में 'जावंत के वि साहू' तथा 'नमोऽर्हत्' सूत्र कहना। तदनन्तर स्तवन अथवा उवसग्गहरं स्तोत्र कहना। फिर खड़े होकर 'अरिहंत चेइयाणं'-'अन्नत्थ' सूत्र कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करना। 'नमो अरिहंताणं' बोलकर कायोत्सर्ग पूर्ण करना। बादमें 'नमोऽर्हत्०' सूत्र बोल-कर स्तुति कहना। फिर एक खमासमण देना।

–

पंडित श्री वीरविजयजी कृत स्नात्रपूजा

[प्रथम कलश ले कर खडा होना] [काव्य द्रुतविलंबितवृत्तम्]

सरसशान्तिसुधारससागरं; शुचितरं गुणरत्न महागरं।
भविकपंकजबोधदिवाकरं, प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरम् ॥१॥

दुहा

कुसुमाभरण उतारीने, पडिमा धरिय विवेक,
मज्जनपीठ थापीने करीये जल अभिषेक....२

[यहाँ प्रभु के दाहिने अंगुठे पर प्रक्षाल करके अंगोछना करके पूजा करना, बाद थाली में कुसुमांजलि लेकर खड़ा रहना]

गाथा—आर्यागीत

जिणजम्मसमये मेरुसिहरे, रयण-कणयकलसेहिं
देवासुरेहिं ण्हविओ, ते धन्ना जेहिं दिट्ठोसि....३

(जहाँ जहाँ 'कुसुमांजलि मेलो' आता हो वहाँ वहां प्रभु के अंगुठे पर कुसुमांजलि रखना)

कुसुमांजलि—ढाल

निर्मल जल कलशे न्हवरावे, वस्त्र अमूलक अंग धरावे,
कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, सिद्ध स्वरूपी अंग पखाली,
आतम निर्मल हुई सुकुमालो, कुसुमां०........४

[प्रभुके दाहिने अंगुठे पर कुसुमांजलि रखना]

गाथा-आर्या गीति

मचकुंदचंपमालइ, कमलाइं पुप्फपञ्चवण्णाइं;
जगनाहन्हवणसमये, देवा कुसुमांजलि दिंति....५

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः

कुसुमांजलि-ढाल

रयणसिंहासन जिन थापीजे, कुसुमांजलि प्रभुचरणे दीजे;
कुसुमांजलि मेलो शान्तिजिणंदा....

दुहाः

जिण तिहुं कालय सिद्धनी, पडिमा गुणभंडार,
तसु चरणे कुसुमांजलि, भविक दुरित हरनार....७

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः

कुसुमांजलि-ढाल

कृष्णागरु वर धूप धरीजे, सुगन्धकर कुसुमांजलि दीजे;
कुसुमांजलि मेलो नेमिजिणंदा ...८

गाथा—आर्या गीति

जसुपरिमल बल दह दिसि, महुकर झंकार सद्दसंगीया;
जिण चलणोवरि मुक्का, सुरनरकुसुमांजलि सिद्धा....९

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्य.

कुसुमांजलि—ढाल

पास जिणेसर जग जयकारी, जलथलफुल उदक करधारी;
कुसुमांजलि मेलो पार्श्वजिणंदा........१०

दुहा :

मुके कुसुमांजलि सुरा, वीरचरण सुकुमाल,

ते कुसुमांजलि भविकना पाप हरे त्रणकाल ११

नमोऽर्हतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

कुसुमांजलि-ढाल

विविधकुसुमवर जाति गहेवी, जिणचरणे पणमन्त ठवेवी;

कुसुमांजलि मेलो वीरजिणन्दा ...१२

वस्तु छन्द

न्हवणकाले न्हवणकाले, देवदाणवसमुच्चिय;

कुसुमांजलि तहि संठविय, पसरन्त दिसि परिमल सुगंधिय

जिणपयकमले निवडेइ, विग्घहर जस नाममन्तो,

अनन्त चउवीस जिन, वासव मलीय असेस;

सा कुसुमांजलि सुहकरो, चउविह संघ विशेष,

कुसुमांजलि मेलो चउवीस जिणन्दा....१३

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः

कुसुमांजलि-ढाल

अनंत चउवीसो जिनजी जुहारूं, वर्तमान चउवीसी संभारूं,

कुसुमांजलि मेलो चोवीस जिणन्दा....१४

दुहा :

महाविदेहे संप्रति विहरमान जिन वीस,

भक्ति भरे ते पूजिया, करो संघ सुजगीश ...१५

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

कुसुमांजलि–ढाल

अपच्छरमंडली गीत उच्चारा, श्री शुभवीरविजय जयकारा,

कुसुमांजलि मेलो सर्व जिणन्दा....१६

[स्नात्र पढानेवाले प्रभुके दाहिने अंगुठेपर कुसुमांजलि रखे]

कुसुमांजलि ढाळ संपूर्ण

—०—

बाद दूहे बोलते बोलते तीन प्रदक्षिणा देकर....

इच्छामि खमासमणो वंदिउं,

जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥

(यह सूत्र तीनबार बोलकर खमासमण देकर जगचिंतामणि चैत्यवन्दन जयवीयरायसूत्र तक करना)

प्रदक्षिणा के दुहे:

१ काल अनादि अनंतथी भव भ्रमणनो नहि पार
ते भव भ्रमण निवारवा प्रदक्षिणा देउं त्रणवार
भमतीमां भमता थकां भवभावठ दूर पलाय
दर्शन ज्ञान चारित्ररूप प्रदक्षिणा त्रण देवाय

२ जन्ममरणादि भय टळे सीझे जो दर्शनकाज
रत्नत्रय प्राप्ति भणी दर्शन करो जिनराज
ज्ञानवडुं संसारमां ज्ञान परमसुख हेत
ज्ञान विना जग जीवडा न लहे तत्त्वसंकेत

३ चय ते संचय कर्मनो रिक्त करे वळी जेह
चारित्र नियुक्ते कह्युं वंदो ते गुणगेह

दर्शन ज्ञान चारित्र ए रत्नत्रयी शिवद्वार
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे भवदुख भंजनहार
[बादमें 'मुखकोश' बांधकर, हाथ को धूप से धूपित कर
कलश हाथमें लेकर खडे रहना]

दुहा :

सयल जिणेसर पाय नमी, कल्याणक विधि तास;
वर्णवतां सुणतां थका, संघनी पुगे आश. १

समकित गुणठाणे परिणम्या, वली व्रतधर संयमसुख रम्या;
विशस्थानक विधिए तप करी, ऐसी भावदया दिलमां धरी. १
जो होवे मुज शक्ति इसी, सवि जीव करू शासन रसी;
शुचिरस ढलते तिहाँ बांधता, तीर्थंकर नाम निकाचतां. २
सरागथी संयम आचरी, वचमां एक देवनो भव करी ;
चवी पन्नर क्षेत्रे अवतरी, मध्यखंडे पण राजवीकुले ३
पटराणी कुखे गुणनिलो जेम मानसरोवर हंसलो;
सुख शैय्याये रजनी शेषे, उतरतां चौद सुपन देखे, ४

ढाल–चौदह स्वप्नकी

पहेले गजवर दीठो, बीजे वृषभ पइठो;
त्रीजे केसरी सिंह, चोथे लक्ष्मी अबीह, १
पांचमे फुलनी माला, छठे चन्द्र विशाला;
रवि रातो ध्वज म्होटो, पूरण कलश नहि छोटो. २

दसमे पद्म सरोवर, अगियारमे रत्नाकर,
भुवन विमान रत्नगंजी अग्निशिखा धूमवर्जी. ३
स्वप्न लही जइ रायने भाखे, राजा अर्थ प्रकाशे;
पुत्र तीर्थंकर त्रिभुवन नमशे, सकल मनोरथ फलशे. ४

वस्तु—छंद

अवधि नाणे अवधि नाणे, उपना जिनराज,
जगत जस परमाणुओ, विस्तर्यो विश्वजंतु सुखकार,
मिथ्यात्व तारा निर्बला, धर्म उदय परभात सुंदर;
जाणंती जगतिलक समो, होशे पुत्रप्रधान. १

दुहा :

शुभ लग्ने जिन जनमीया, नारकीमां सुखज्योत;
सुख पाम्या त्रिभुवन जना, हुओ जगत उद्योत. १

ढाल—कडखानी देशी.

सांभली कलश जिन—महोत्सवनो इहां,
छप्पन कुमरी दिशि विदिशि आवे तिहां;
माय सुत नमीय, आणन्द अधिको धरे,
अष्ट संवर्त्त वायुथी कचरो हरे. १
वृष्टि गंधोदके अष्ट कुमरी करे,
अष्ट कलशा भरी, अष्टदर्पण धरे;
अष्ट चामर धरे, अष्ट पंखा लही,
चार रक्षा करी चार दीपक ग्रही. २

घर करी केळना, माय सुत लावती,
करण शुचिकर्म जल-कळशे न्हवरावती;
कुसुम पूजी, अलंकार पहेरावती,
राखडी बांधी जइ, शयन पधरावती. ३

नमीय कहे माय तुज बाळ लीलावती,
मेरु रवि चन्द्र लगे, जीवजो जगपति;
स्वामी गुण गावती, निज घर जावती,
तेणे समे इन्द्रसिंहासन कंपती, ४

दाळ--एकवीशानी देशी

जिन जनम्याजी, जिण वेळा जननी घरे,
तिण वेळाजी, इन्द्रसिंहासन थरहरे;
दाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा,
दिशिनायकजी, सोहम इशान बिहु तदा. १

त्रोटक-छंद

सदा चिंते इन्द्र मनमां, कोण अवसर ए बन्यो,
जिन जन्म अवधिनाणे जाणी, हर्ष आनंद उपन्यो. १
सुघोष आदे घंटनादे, घोषणा सूरमें करे,

(यहाँ घंट बजाना)

सवि देवीदेवा जन्म महोत्सवे आवजो सूर गिरिवरे. २

दाल--

एम सांभळीजी, सुरवरकोडी आवी मळे

जन्म महोत्सवजी, करवा मेरु उपर चले;
सोहमपतिजी, वहु परिवारे आवीया
माय जिननेजी, वादी प्रभुने वधावीआ ३
(यहाँ प्रभुजी को अक्षतसे वधाना)

-त्रोटक-

वधावी बोले हे रत्नकुक्षीधारिणी ! तुज सुत तणो;
हुं शक्र सोहम नामे करशुं, जन्म महोत्सव अतिघणो;
एम कही जिन प्रतिबिंब थापी, पंच रूपे प्रभु ग्रही;
देवदेवी नाचे हर्ष साथे सुरगिरि आव्या वही. ४

ढाल

मेरु उपरजी पाडुक–वनमें चिहुं दिशे,
शिला उपरजी, सिंहासन मन उल्लसे,
तिहा वेसीजी, शक्रे जिन खोळे धर्या,
हरि त्रेसठजी, बीजा तिहा आवी मळ्या. ५

-त्रोटक-

मळ्या चोसठ सुरपति तिहा, करे कळश अड जातिना,
मागधादि जळ तीर्थऔषधि, धूप वळी बहु भांतिना;
अच्युतपतिए हुकम कीनो, सामळो देवा सवे,
खीरजलधि गंगानीर लावो, झटिति जिन जन्म महोत्सवे. ६

-ढाल–विवाहलानी देशी

सुर सांभळीने सचरीया, मागध वरदामे चलीया;
पद्मद्रह गंगा आवे, निर्मळ जळ कळशा भरावे. १

तीरथ जळ ओषधि लेता, वळी खीर समुद्रे जाता,
जळकळशा बहुल भरावे, फुल चंगेरी थाळा लावे. २
सिंहासन चामर धारी, धूपधाणां रकेबी सारी;
सिद्धाते भाख्या जेह, उपकरण मिळावे तेह. ३
ते देवा सुरगिरि आवे, प्रभु देखी आनंद पावे;
कळशादिक सहु तिहां ठावे, भक्ते प्रभुना गुण गावे. ४

ढाळ-राग-धनाश्री

आतमभक्ति मळ्या केई देवा, केता मित्तनु जाई,
नारीप्रेर्या वळी निजकुळवट, धर्मी धर्मसखाई;
जोइस व्यंतर भुवनपतिना, वैमानिक सूर आवे,
अच्युतपति हुकमे धरी कळशा, अरिहाने नवरावे. आतम. १
अडजाति कळशा प्रत्येके आठ आठ सहस प्रमाणो;
चउसठ सहस हुआ अभिषेके अढीसें गुणा करी जाणो
साठ लाख उपर एक कोडी, कळशानो अधिकार;
बासठ इन्द्र तणां तिहा बासठ, लोकपालना चार. आतम. २
चन्द्रनी पंक्ति छासठ छासठ, रविश्रेणी नरलोको;
गुरुस्थानक सुरकेरो एक ज, सामानिकनो एको;
सोहमपति इशानपतिनी, इन्द्राणीना सोळ;
असुरनी दश इन्द्राणी, नागनी बार करे कल्लोल. आ. ३
ज्योतिष व्यंतर इन्द्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको;
कटकपति अंगरक्षक केरो एक एक सुविवेको;

परचूरण सूरनो एक छेल्लो, ए अढीसें अभिपेको;
ईशान इन्द्र कहे मुज आपो, प्रभुने क्षण अतिरेको. आ. ४
तव तस खोळे ठवी अरिहाने, सोहमपति मनरंगे;
वृपभरूप करी शृंग जळे भरी, न्हवण करे प्रभु अंगे;
पुष्पादिक पूजीने छांटे, करी केसर रंगरोळे;
मंगळदीवो आरति करतां सूरवर जय जय बोले. आ. ५
भेरी भूंगळ ताल वजावत, वळीया जिन कर धारी,
जननीघर माताने सोंपी, एणी पेरे वचन उच्चारी;
'पुत्र तुमारो स्वामी हमारो, अम सेवक :आधार;
पंच धावी रम्भादिक थापी, प्रभु खेलावण हार. आ. ६
बत्रीस कोडी कनकमणिमाणिक, वस्त्रनी वृष्टि करावे
पूरण हर्ष करेवा कारण द्वीप नंदीसर जावे;
करीय अट्ठाइ उत्सव देवा, निज निज कल्प सधावे;
दीक्षा केवळने अभिलापे, नित नित जिन गुण गावे. आ. ७
तपगच्छ–ईसर सिंहसूरीश्वर, केरा शिष्य वडेरा,
सत्यविजय पंन्यासतणे पद, कपूरविजय गम्भीरा;
खिमाविजय तस सुजसविजयना, श्री शुभविजय सवाया;
पंडित वीरविजयं तस शिष्ये, जिन-जन्म-महोत्सव गाया. आ. ८
उत्कृष्टा एकसोने सित्तेर, सम्प्रति विचरे वीश,
अतीत अनागत काळे अनन्ता, तीर्थंकर जगदीश
साधारण ए कळश जे गावे श्री शुभवीर सवाई,
मंगळ लीळा सुखभर पावे, घर घर हर्ष वधाई,....आ. ९

यहाँ प्रभु को अक्षत से वधाना. कळश द्वारा अभिषेक करके पंचामृतप्रक्षाल करना.
बादमें चंदन पूजा करके पुष्प चढाना, लूण उतारकर आरती तथा मंगळदीवा उतारना. शांतिकळश करना।

× × × ×

श्री आदिजिणंदनी आरति

जयजय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवीको नंदा. ज.१
पहेली आरती पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे. जं. २
दुसरी आरतो दिन दयाळा, धूळेवा मंडपमा जग अजवाला. ज.३
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुरनर इन्द्र करे तोरी सेवा. ज. ४
चोथी आरती चउगति चूरे, मनवंछित फल शिवसुख पूरे. ज. ५
पंचमी आरती पुण्य उपाया, मूळचंद ऋषभ गुण गाया ज. ६

मंगल दीवो

दीवोरे दीवो प्रभु मंगलीक दीवो, आरति उतारीने बहु चिरंजीवो. दी. १
सोहामणुं घेर पर्व दीवाळी, अम्बर खेले अमरावाळी दी. २
दीपाळ भणे एणे कुल अजुवाळी, भावे भगते विघन निवारी. दी.३
दीपाळ भणे एणे ए कलीकाले, आरति उतारी राजा कुमारपाळे.दी.४
अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक मंगलिक चतुविधसंघने होजो० दी. ५

शांतिकलश

(नमोऽर्हत्० कही त्रणवार नवकार, उवसग्गहरं कही बृहत्शांति स्तोत्र कहेवुं)

बृहत्शांति स्तोत्र

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद् ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः; तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादि प्रभावादारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥

भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावतविदेहसभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनान्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सहसमागत्य, सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति, यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः, इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमितिकृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥२॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ॥३॥

ॐऋषभ—अजित—सभव—अभिनंदन—सुमति-पद्मप्रभ—सुपार्श्व-चंद्रप्रभ—सुविधि—शीतल—श्रेयांस—वासुपूज्य—विमल—अनन्त—धर्म—शाति--कुंथु—अर—मल्लि-मुनिसुव्रत--नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ॥४॥

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री धृति--मति--कीर्ति--कान्ति--बुद्धि--लक्ष्मी-मेधा-विद्यासाधनप्रवेशननिवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः॥६॥

ॐ रोहिणी--प्रज्ञप्ति- वज्रशृंखला--वज्रांकुशी--अप्रतिचक्रा-पुरुषदत्ता--काली--महाकाली -गौरी-गान्धारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला-मानवी वैरोट्या--अच्छुप्ता--मानसी--महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥७॥

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥८॥

ॐ ग्रहाश्चन्द्र--सूर्यांगारक--बुध--बृहस्पति-शुक्र--शनैश्चर-राहु-केतुसहिताः--सलोकपालाः सोम--यम--वरुण--कुबेर--वासवादित्य--स्कंदविनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॥९॥

ॐ पुत्र--मित्र--भ्रातृ--कलत्र-सुहृत्--स्वजन--संबंधि--बंधुवर्ग-सहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च भूमण्डलायतन-निवासिसाधु-साध्वी-श्रावक--श्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥१०॥

ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवाः, सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ॥११॥

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ।
त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥१॥

शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।
शान्तिरेव सदा तेषां येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥२॥

उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-ग्रहगति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि- ।
सपादितहित-संपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥
श्रीसंघ-जगज्जनपद,-राजाधिप-राजसन्निवेशानाम् ।
गोष्ठिक-पुरमुख्याणां, व्याहरणै-र्व्याहरेच्छान्तिम् ॥४॥

श्रीश्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु । श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु । श्री पौरजनस्य शान्तिर्भवतु । श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु, ॐस्वाहा ॐस्वाहा ॐश्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥

एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा-स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुम--चंदन--कर्पूरागरु--धूपवास--कुसुमांजलि--समेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्प-वस्त्र-चंदनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि ।
स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान् कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥
शिवमस्तु सर्वजगत परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥२॥
अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥३॥
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनःप्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

—०—

स्तवन

(१) जिन तेरे चरण की शरण ग्रहुं, हृदयकमल में ध्यान धरत हुं.
शिर तुज आण वहुं.... जिन० १
तुज मम सौर्ल्यो देव खलक में, पेख्यो नाही कबहुं....जिन० २
तेरे गुण को जपुं जपमाला, अहनिश पाप दहुं ... जिन० ३
मेरे मन की तुम सब जानो, क्या मुख बहोत कहुं....जिन० ४
कहे जसविजय करो त्युं साहिब, ज्युं भव दुःख न लहुं....जिन०

*

(२) क्युं कर भक्ति करूं प्रभु तेरी ...?
क्रोध-लोभ - मद -मान विषयरस, छांडत गेल न मेरी
कर्म नचावे तिमहि नाचत, माया वश नटचेरी, प्रभु०
दृष्टिराग दृढ बन्धन बान्यो, नीकसन न रही शेरी, प्रभु०
करत प्रशंसा सब मिल अपनी, पर-निंदा अधिकेरी, प्रभु०
कहत मान जिन भावभगति बिन, शिव गति होत न मेरी प्रभु०

*

(३) लाग्या नेह जिनचरणे हमारा, जिम चकोर चित्त चंद पियारा
सुनत कुरंग नाद मन लाई, प्राण तजे पण प्रेम निभाई

घन तज पाणी न जाचत जाई, ए खग चातक केरी वडाई
लाग्या नेह० १

जलत निःशंक दीपके मांही, पीर पतंग कु होत के नाही
पीडा होत तदपण तिहा जाही, शंक प्रीति वश आवत नाही
लाग्या नेह० २

मीन मगन नहीं जलथी न्यारा, मानसरोवर हस आधारा
चोर निरख निशि अति अंधियारा, केकी मगन सुन फुन गरजारा
लाग्या नेह० ३

प्रणव ध्यान जिम जोगी आराधे, रम रीति रस साधक साधे
अधिक सुगंध केतकी में लाधे, मधुकर तस सकट नाहि बाधे
लाग्या नेह० ४

जाका चित्त जिहा थिरता माने ताका मरम तो तेहिज जाने
जिनभक्ति हिरदे में ठाने चिदानंद मन आनंद आने. लाग्या नेह० ५

*

(४) आनंद की घडी आई सखीरो आज आनद की घडी आई
करके कृपा प्रभु दरिसण दीनो, भव की पीड मीटाई
मोह निद्रासे जाग्रत करके, सत्य की सान सुनाई,
तनमन हर्ष न माई . . सखी० आज० . . . १
नित्यानित्य का ताड बताकर, मिथ्यादृष्टि हराई,
सम्यग् ज्ञानकी दिव्यप्रभा को, अतर में प्रगटाई,
साध्य - साधन दिखलाई ... सखी० आज० .... २

त्याग वैराग्य और संयमयोग से, निस्पृह भाव जगाई
सर्वसंग का त्याग कराकर, अलख धून मचाई,
अपगत दुःख कहलाई ... सखोरी आज० ३
अपूर्वकरण गुणस्थानक सुखकर, श्रेणी क्षपक मंडवाई
वेद तीनों का छेद कराकर, क्षीणमोही बनवाई,
जीवन मुक्ति दिलाई ...सखीरी आज०....४
भक्त वत्सल प्रभु ! करुणासागर, चरण शरण सुखदाई
जस कहे ध्यान प्रभु का ध्यावत, अजर अमर पद पाई
द्वंद्व सकल मिट जाई.... सखोरी आज....५
(५) काम सुभट गयो हारी रे ...थाशुं काम सुभट गयो हारो
रतिपति आण वशे सहु सुरनर, हरिहर बंभ मुरारि रे....थाशुं०
गोपीनाथ विगोपित कीनो, हर अर्धांगित नारी रे....थाशुं०
तेह अनंग कियो चकचुरा, ए अतिशय तुज भारी रे....थाशुं०
ते साचुं ज्युं नीर प्रभावे अग्नि होवत सवी छारी रे ...थाशुं०
पण वडवानल प्रबल जब प्रगटे तब पीवत सवो वारी रे....थाशुं०
एणी परे ते दहवट अति कीनो विषय अरति रति वारी रे...थाशुं०
नयविमल प्रभु तुंही निरागी महामोटो ब्रह्मचारी रे ...थाशुं०

*

(६) आवो मुज मन धाम, प्रभुजी आवो०
मम उपारा तुमे न मानो हाथ न झालो दाम
नेहनजर सुं कांई न निहालो, वीतराग तुम नाम, प्रभुजी.

कोई हरिहर बंभने माने कोईने मन राम
हुं सरागी वीतरागनो रे मोहियो गुणग्राम प्रभुजी.
तुंही तुंही तुंही तुंही जाप जपंता आम
केई शुभरागे भव तर्या एम केतां कहुं स्वाम प्रभुजी.
लहे सरागी शुभभावशुं वीतरागता परिणाम
तेहने शी खोट जस शिर, तुंही आतमराम प्रभुजी.

*

(७) जिणंदा ! वे दिन क्युं न संभारे,
साहिब तुम हम समय अनंतो, एकठा ईण संसारे. ..जिणंदा.
आप अजर अमर होई बैठे, सेवक करिये किनारे
मोटा जेह करे ते छाजे, तिहा तुमने कुण वारे....जिणंदा.
त्रिभुवन ठकुराई अब पाई, कहो तुम्हने कुण सारे
आप उदास भाव में आये, दास कुं क्युं न सुधारे....जिणंदा.
तुंही तुंही तुंही तुंही तुंही जे चित्त धारे,
याही हेतु जे आप स्वभावे भव जल पार उतारे....जिणंदा.
ज्ञानविमल गुण परमानंदे सफल समीहित सारे
बाह्य अभ्यंतर इति उपद्रव अरियण दूर निवारे ..जिणंदा.

*

(८) तारी मूरतिये मन मोह्युं रे....मनना मोहनीया
तारी सूरतिये जग मोह्युं रे....जगना जीवनीया....१

तुम जोता सवी दुरमति विसरी, दिन रातडी नवी जाणी,
प्रभु गुणगण साँकळशुं बांध्यु, चंचल चित्तडुं ताणी रे...
मनना, ...२

पहेलां तो एक केवळ हरखे, हेजालु थइ हळियो,
गुण जाणीने रूपे मळियो, अभ्यंतर जइ भळियो रे मनना....३
वीतराग इम जस निसुणीने, रागी राग करेह रे
आप अरूपी राग निमित्ते, दास अरूप धरेह रे मनना....४
श्री सीमंधर तुं जगबंधु, सुंदर ताहरी वाणी
मंदर भुधर अधिक धीरजधर, वंदे ते धन्य प्राणी रे मनना....५
श्री श्रेयांसनरेसर नंदन, चंदन शीतल वाणी,
सत्यकी माता वृषभ लंछन प्रभु, ज्ञानविमळ गुणखाणी रे
मनना०....६

सिद्धगिरिना स्तवनो :

(राग–दुर्गा)

(१) क्युं न भये हम मोर....विमलगिरि, क्यु न भये हम मोर....१
सिद्धवड रायणरूखकी शाखा, झुलन करत झकोर विमलगिरि ...२
आवत संग रचावत आँगिया, गावत गुण घमघोर....विमलगिरि....३
हम भी छपकला करी निरन्तर, कटने कर्म कठोर विमलगिरि....४
मूरत देख सदा मन हरखे, जैसे चंद चकोर....विमलगिरि...५
श्रीरिसहेसर दास तिहारो, अरज करत करजोर विमलगिरि ...६

*

(२) मोरा आतमराम कुण दिने शेत्रुंजे जाशुं....

शेत्रुंजा केरी पाजे चढतां ऋषभतणा गुणगाशुं....मोरा १

ए गिरिवरनो महिमा सुणीने, हियडे समकित वास्युं....

जिनवर भाव सहित पूजीने, भवे भवे निर्मळ थाशुं....मोरा २

मन वच काय निर्मळ करीने, सुरज कुंडे न्हाशुं....

मरुदेवीनो नंदन नीरखी, पातक दूरे पलास्युं... मोरा ३

इण गिरि सिद्ध अनंता हुआ, ध्यान सदा तस ध्याशुं....

सकळ जनममां ए मानवभव, लेखे करीय सराशुं...मारा ४

सुरवर पूजित पदकज रज निलवट तिलके चढावशुं....

मनमां हर्षी डुंगर फरसी, हैडे हरखीत थाशुं... मोरा....५

समकितधारी स्वामि साथे, सदगुरु समकित लाशुं...

'छरी' पाळी पाप पखाळी, दुर्गति दूरे पलाश्यु....मोरा....६

श्री जिननामी समकित पामी, लेखे त्यारे गणाशुं

ज्ञानविमळ कहे धनधन ते दिन, परमानंद पदपाशु

मोरा आतमराम..........७

*

(९) शेत्रुंजागढना वासी रे मुजरो मानजोर

सेवकनी सुणी वातो रे, दिलमां धारजो रे शेत्रुंजा... १

प्रभु में दीठो तुम देदार, आज मुने उपन्यो हरख अपार

साहिबानो सेवाग भवदुख भांजजोर शेत्रुंजा... २

एक अरज अमारी रे, दिलमां धार रे

चोरासी लाख फेरा रे, दूर निवारयो रे शेत्रुंजा ३

मने दुर्गति पडतो रास्त, प्रभु तारु दरशन वहेलुं रे दास्त
दोलत सवाइ रे सोरठ देशना रे, बलिहारी हुं जाउं रे प्रभु
तारा वेशनो रे... ..शेत्रुंजा....४

प्रभु में दीठु रुडुं तारु रुप,
मोह्या सुर, नर वृन्द ने भूप....शेत्रुंजा ५
तीरथ को नाही रे शेत्रुंजा सारिखु रे....
प्रवचन पेखीने कीधुं में पारखु रे....
ऋषभने जोइ जोइ हरखे जेइ
त्रिभुवन लीला पामे तेह ....शेत्रुंजा ६
भवोभव मागुं रे प्रभु तारी सेवना रे....
भावठ न भांगे रे जगमां जे विना रे....
प्रभु मारा पूरो मनना कोड,
एम कहे उदयरतन कर जोड....शेत्रुंजा० ७

: श्री ऋषभजिन स्तवनो

(१०) वालुडो निस्नेही थइ गयो रे, छोडयुं विनीतानुं राज
संयम रमणी आराधवा, लेवा मुक्तिनुं राज...
मेरे दिल वसी गयो वाल्मो....मेरे मन वसी गयो वाल्मो
माताने मेलया एकलार, जाय दिन नवि रात (२)
रत्न सिंहासन वेसवा, चाले अणवाणे पाय (२) मेरे....२
वहालानुं नाम नवि विसरे झरे आंसुडानी धार (२)
आंसुडोए झाया वळा, गया वर्ष हजार (२) ....मेरे

श्री शातिनाथ जिन के स्तवन

हम मगन भये प्रभु ध्यानमें, बिसर गइ दुविधा तनमनकी
अचिरासुत गुण गानमें....हम०
हरि हर ब्रह्मा पुरंदरकी रिद्धि, आवत नहीं कोउ मानमें,
चिदानंदकी मोज मची हैं, समतारसके पानमें .हम० १
इतने दिन तुम नाहीं पिछान्यो, मेरो जन्म गयो सो अजानमें
अब तो अधिकारी होइ बैठे, प्रभु गुण अखय खजानमें . .हम. २
गइ दीनता अब सबही हमारी, प्रभु तुज समकित दानमें
प्रभुगुण अनुभव रसके आगे, आवत नही कोउ मानमें....हम. ३
जिनही पाया तिनही छीपाया, न कहे कोउके कानमें,
ताली लागी जब अनुभवकी, तब समजे कोउ सानमें ...हम. ४
प्रभु गुण अनुभव चन्द्रहास ज्युं, सोतो न रहें म्यानमें,
वाचक जश कहे मोह महा अरि, जित लियो मैदानमें . .हम

—०—

शांति जिनेश्वर साचो साहिब शांति करण इण कलिमें हो जिनजी
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरुं पल-पलमें साहेबजी
... तुं मेरा १
भवमां भमता में दरिशन पायो, आशा पुरो एक पलमें हो
जिनजी ..२
निरमलज्योत वदन पर सोहे निकस्यो ज्युं चंद बादल में हो
जिनजी ... ३

मेरो मन तुम साथे लीनो मीन-वसे ज्युं जलमें हो जिनजी...४
जिनरंग कहे प्रभु शांतिजिनेश्वर
दीठोनो देव सकल में हो जिनजी....५

श्रीपार्श्वनाथ प्रभुके स्तवन

समय समय सो वार संभारुं, तुजशुं लगनी जोररे
मोहन मुजरो मानी लीजे ज्यु जलधर प्रीति मोर रे....
माहरे तन धन जीवन तुंही, एहमां जूठ न जानो रे....
अंतरजामी जग जन नेता तु कींहा नथी छानो रे....
जेणे तुजने हियडे नवि धार्यों तास जनम कुण लेखे रे....
काचे राचे ते नर मुरख, रतनने दूर उवेखे रे
सुरतरु छाया मूकी गहरी, बाउल तले कुण वेहेरे...
ताहरी ओलग लागे मीठी, किम छोडाय विशेषेरे ....
वामानंदन पास प्रभुजी अरजी चित्तमां आणो रे
रूप विबुधनो मोहन पभणे, निज सेवक करी जाणोरे...

—×—

कोयल टहुकी रही मधुवन में, पार्श्व शामलिया वसो मेरे दिलमें
काशीदेश वाराणसी नगरी, जन्म लियो प्रभु क्षत्रियकुलमें. कोयल०
बालपणामां प्रभु अद्भुतज्ञानी, कमठको मान हर्यो एक पलमें. कोयल०
नाग निकला काष्ठ चीराकर, नागकुं सुरपति कियो एक छीनमें. को०
संयम लई प्रभु विचरवा लाग्या संयमे भीज गयो एक रंगमें. को०
समेतशिखर प्रभु मोक्ष सिधाव्या पार्श्वजीको महिमा तीनभवन में. को०
उदयरतनकी एही अरज है दील अटको तोरा चरणकमल में को०

श्रीमहावीर प्रभुके स्तवन

वीर वीरनी धून जगावो, प्रभु वीरना दरशन पावो
प्रभु वीरने शीर झुकावो, वीर वीरनी धून जगावो
भवसागरमां वीर सुकानी, नैया पार तरावो
पापनी मेखड दूर हटावो, शिवमंदिर वतलावो
देहसदनमां आत्मा जगाडो, ज्ञानज्योति प्रगटावो
भाव भरेला अमीरस सिंचो, आभव पार उतारो

—x—

रूडी ने रढीयाळी रे वीर तारी देशना रे
एतो भली योजनमा संभळाय, समकितबीज आरोपण थाय रुडो०
षट् महिनानारे भुख तरस शमे रे, साकर द्राक्ष ते हारीजाय,
कुमति जनना मद मोडाय रूडी०
चार निक्षेपे हो सात नये करीरे, मांहे भली सप्तभंगी विख्यात,
निज निज भाषाए सहु समजात रूडी०
प्रभुजीने ध्याता हो शिव पदवी लहेरे आतमऋद्धिनो भोक्ता थाय,
ज्ञानमा लोकालोक समाय, रुडी०
प्रभुजी सरीखा हो देशक को नहि रे, एम सहु जिन उत्तम गुण गाय,
प्रभुपद पद्मने नित्य नित्य ध्याय रुडी०

\+ + +

जगपति तुं तो देवाधिदेव ! दासनो दास तुं तारो
जगपति तारक तुं किरतार, मनमोहन प्रभु मारो ...१

जगपति ताहरे भक्त अनेक, माहरे एकज तुं घणी
जगपति वीरमां तुं महावीर, मुरति ताहरी सोहामणी....२
जगपति त्रिशलाराणीनो तुं तंत, गंधार बंदरे गाजीओ,
जगपति सिद्धारथ कुल शणगार, राजराजेश्वर राजियो ..३
जगपति भक्तोनी भागे तुं भीड, पीड पराई प्रभु पारखे
जगपति तु ही प्रभु अगम अपार, समज्यो न जाये मुज सारिखे...४
जगपति खंभातय जंबुसर संघ, भगवंत चोवीसमो भेटीयो
जगपति उदय नमे कर जोड़ सत्तर नेवुं समे कीयो..५

* + *

माता त्रिशला नंदकुमार, जगतनो दीवो रे
मारा प्राण तणो आधार, वीर घणुं जीवो रे
आमलकी क्रीडाये रमतां, हार्यो सुर प्रभु पामी रे
सुणजो ते स्वामी आतमरामी वात कहुं शीर नामी रे
वीर घणुं जीवोरे–माता० १
सुधर्मा सुरलोके रहेता, अमो मिथ्यात्व भराणां रे
नागदेवनी पूजा करतां, शिर न धरी प्रभु आणा रे....२
एक दिन इन्द्रसभामां बेठा सोहमपति एम बोले रे
धीरज बल त्रिभुवननुं नावे त्रिशला बालक तोले रे..३
मानुं साचुं मद सुर बोल्या पण में वात न मानी रे
फणीधरने लघु बालक रूपे, रमत रमीयो छानी रे....४

वर्धमान तुम धरज मोटुं वळमा पण नहि काचुं रे
गिरुआना गुण गिरुआ गावे हवे में जाण्युं साचुं रे....५
एकज मुष्टि प्रहारे म्हारुं मिथ्यात्व भाग्युं जाय रे
केवळ प्रगटे मोह रायने, रहेवानुं नहि थाय रे...६
आज थकी तुं साहिब मारो हुं छुं सेवक तारो रे
क्षण एक स्वामी गुण न विसारूं, प्राण थकी तुं प्यारो रे ७
मोह हरावे समकित पावे, ने सुर स्वर्ग सिधावे रे,
महावीर प्रभु नाम धरावे, इन्द्र सभा गुण गावे रे ...८
प्रभु मलपंता निज घेर आवे सरिखा मित्र सुहावे रे
शुभवीरनुं मुखडुं जोता माताजी सुख पावे रे ...९

\+ + + +

प्रभु विण वाणी कोण सुणावे ?

जब ये वीर गये शिवमंदिर, अब मेरा संशय कोण मिटावे. प्रभु०
कहे गौतम गणहर तमहर ए जिनवर दिनकर जावे रे जावे. प्रभु०
कुमति उद्धत कुतीर्थ कतारा निशनिशाट ...तस थावे रे थावे. प्रभु०
तुम विण चौविह संघ कमलवन, विकसित कोण करावे, करावे प्रभु०
मोकु साथ लई क्युं न चले, चित्त अपराध धरावे धरावे. प्रभु०
युं परभाव विचारो अपनो, भाव समभाव मन लावे रे लावे. प्रभु०
वीर वीर लवतां वी अक्षर, अंतर तिमिर हटावे हटावे. प्रभु०
इन्द्रभूति अनुभव अनुभूति, ज्ञानविमल गुण पावे रे पावे प्रभु०
सकल सुरासुर हरखित होवत, जुहार करणकुं आवे रे आवे. प्रभु०

\+ + + +

दीन दुःखीयानो तुं छे बेली तुं छे तारणहार
तारा महिमानो नहि पार........तारा०
राजपाट ने वैभव छोडी, छोडी दीधो संसार....तारा०
चंडकोशीयो डसीयो ज्यारे दूधनी धारा नीकळी त्यारे
विषने बदले दूध जोई ने चंडकोशीयो आव्यो शरणे
चंडकोशीयाने तें तारी कीधो घणो उपकार..... .तारा०
कानना खीला ठोकया ज्यारे थई वेदना प्रभुने त्यारे
तोये प्रभुजी शांति विचारे गोवाळनो नहि वांक लगारे
क्षमा आपी ते जीवोने तारी दीधो संसार........तारा०
महावीर! महावीर! गौतम पूकारे आंखथी आंसुनी धारा वहावे
क्यां गया एकला मुकी मुजने, हवे नथी जगमा कोई मारे
पश्चाताप करता करतां उपन्युं केवलज्ञान........तारा०
ज्ञानविमल गुरु वयणे आजे गुण तमारा गावे हरखे
थई मुक्तानो तुं प्रभु आवे नैया भवजलपार तरावे
अरज स्वीकारो दिलमां धारो वदन वारंवार.... तारा०

\+ ॐ +

(१) सज्झाय

लज्जा मोरी राखो देव खरी—

द्रौपदी राणी युं कर विनवे, कर दोय शीश धरी,
मुज रखे प्रीतम मुज हार्यो वात करी न खरी.... लज्जा.

देवर दुर्योधन, दुःशासन एहनी बुद्धि फरी
चीवर खेंचे मोटी सभामें, मनमें द्वेष धरी.... लज्जा.

भीष्म, द्रोण, कर्णादिक सर्वे, कौरव बीक भरी
पांडव प्रेम तजी मुज बेठा जे हता जीव जुरी.... लज्जा.

अरिहंत एक आधार हमारे, शियल सुगंध धरी
पत राखो प्रभुजी इण वेळा, समकितवंत सूरी.... लज्जा.

ततखिण अष्टोत्तर शत चीवर, पूर्या प्रेम धरी
शासनदेवी जय जय बोले, कुसुमनी वृष्टि करी.... लज्जा.

शियळ प्रभावे द्रौपदी राणी, लज्जा लीळवरी
पाडव कुंत्यादिक सौ हरख्या, कहे धन्य धीर धरी.... लज्जा.

सत्य शील प्रतापे कृष्णादि भव जल पार तरी
जिन कहे शियल धरे तस जनने नमीए पाय परी.... लज्जा.

(२)

जगत है स्वार्थ का साथी समज ले कौन है अपना,
ये काया काचका कुम्भा नाहक तु देख के फुळता
पलकमें फूट जावेगा, पत्ता ज्युं डालसे गिरता— जगत.

मनुष्यकी ऐसी जिंदगानी, अभी तु चेत अभिमानी
जिवन का क्या भरूसा है करी ले धर्म की करणी—जगत.

खजाना माल ने मन्दिर, क्युं कहेता मेरा मेरा तुं
इहां सब छोड जाना है, न आवे साथ अब तेरा— जगत.

कुटुम्ब परिवार सुतदारा सुपन सम देख जग सारा
निकल जब हंस जावेगा, उसी दिन है सभी न्यारा—जगत.
तेर ससारसागरको जपे जो नाम जिनवरको
कहे खाति यही प्राणी हटावे कर्मजंजीर का—- जगत.

(३)

कौन कीसीको मित्र, जगतमें कौन कीसाको मित्त
मात तात ओर जात स्वजनसे काइ रहत निचित—-जगत.
सबही अपने स्वारथके है, परमारथ नहि प्रीत,
स्वारथ विणसे सगो न होसी, मित्ता मनमें चित— जगत.
उठ चलेगो आप एकोलो, तुंही तु सुविदित,
को नहि तेरा तुं नहि किसका, एह अनादिरीत—जगत

४

अवसर बेर बेर नहीं आवे (२)
ज्युं जाणे त्युं करले भलाइ जनम जनम सुखपावे १
तन धन जोबन सबही जूठो प्राण पलक में जावे २
तन छूटे धन कौन कामको काहेकुं कृपण कहावे ३
जाके दिल में साच बचत है ताकुं जूठ न भावे ४
आनदघन प्रभु चलत पंथ में समरी समरी गुण गावे ५

५

जगमें न तेरा कोइ (२) नर देख हुं निश्चे जोइ
सुत मात तात अईनारी सो स्वारथके हितकारी
विन स्वारथ शत्रु सोइ....जगमें० १

तुं फिरत महामदमाता, विषय न संग मूरख राता
निज अंग की शुद्धबुद्ध खोइ जगमें. २
घटज्ञानकला नव जाकुं पर निज मानत सुन ताकुं
आखिर पस्तावा होइ जगमें. ३
नवि अनुपम नरभव हारो निज शुद्ध स्वरुप निहारो
अंतर ममता मल धोइ जगमें.....४
प्रभु चिदानन्दकी वाणी धार तुं अब मनमें प्राणी
जिम सफल होत भव दोइ जगमें.

प्रभुसन्मुख बोलनेकी स्तुतियाँ

पूर्णानन्दमयं महोदयमयं कैवल्यचिद्दङमयं,
रूपातीतमयं स्वरूपरमणं स्वाभाविकी श्रीमयम् ।
ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वादविद्यालयम्,
श्रीसिद्धाचलतीर्थराजमनिषं वन्देऽहमादीश्वरम् ॥
श्रीआदीश्वर शांति नेमिजिनने श्रीपार्श्व वीरप्रभु,
ए पांचे जिनराज आज प्रणमुं हेते धरी हे विभु ।
कल्याणे कमला सदैव विमला वृद्धि पमाडो अति,
एवा गौतमस्वामी लब्धि भरीया आपो सदा सन्मति ॥
आव्यो शरणे तमारा जिनवर करजो आश पूरी अमारी,
नाव्यो भवपार मारो तुम विण जगमां सार ले कोण मारी ।
गायो जिनराज आजे हरख अधिकथी परम आनंदकारी,
पायो तुम दर्शनासे भवभयभ्रमणा नाथ सर्वे अमारी ॥

ताराथी न समर्थ अन्य दीननो उद्धारनारो प्रभु !
माराथी नहि अन्य पात्र जगमां जोता जडे हे विभु !
मुक्ति मंगल स्थान ! तोय मुजने इच्छा न लक्ष्मी तणी
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाय घणी ॥

हे प्रभो आनंददाता ज्ञान हमको दिजीए,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए,
लीजिये हमको शरणमें हम सदाचारी बनें
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीरव्रत धारी बनें ॥

वीतराग हे जिनराज ! तुजपद पद्मसेवा मुज होजो !
भवभवविषे अनिमेषनयने आपनुं दर्शन थजो
दयासिन्धु विश्वबन्धु दिव्यदृष्टि आपजो
करी आप सम सेवक तणा संसारबंधन कापजो ॥

बहुकाळ आ संसारसागरमां प्रभु हुं संचर्यो,
थइ पुण्यराशि एकठी त्यारे जिनेश्वर तुं मळ्यो ।
पण पापकर्म भरेल में सेवा सरस नव आदरी
शुभयोगने पाम्या छता में मूर्खता बहु परि करी ॥
भवजळधिमांथी हे प्रभो ! करुणा करीने तारजो
ने निर्गुणीने शिवनगरनां शुभसदनमां धारजो ।
आ गुणी ने आ निर्गुणी एम भेद मोटा नव करे ।
शशि सूर्य मेघ परे दयाळु सर्वना दुःख हरे ॥
हे नाथ ! आ संसार सागर डुबता एवा मने

मुक्तिपुरीमां लइ जवाने जहाजरूपे छो तमे
शिवरमणीना शुभसंगथी अभिराम एवा हे प्रभो !
मुज सर्वसुखनुं मुख्य कारण छो तमे नित्ये प्रभु ॥
अँगुठे अमृतवसे लब्धितणा भंडार ।
श्री गुरु गौतम समरीये वांछितफलदातार ॥

* * *

रोज बोलकर प्रार्थना करो—

अरिहंत परमात्माको प्रार्थना

(पिंडवाड़ा शिक्षायतन (शिविर) में विद्यार्थियों के समक्ष दी हुइ वाचना के आधार से)

हे अरिहंत ! हे भगवंत ! हे वीतराग ! हे अभयदाता ! हे आत्मोद्धारक ! हे कर्मविनाशक ! हे गीर्वाण गुरु गुरु ! हे चारित्र मूर्ति ! हे छद्मस्थभावातीत ! हे जगद्गुरु जिनेश्वर ! हे हे त्रिभुवनपति तीर्थंकर ! हे दीनोद्धारक ! हे धर्मधुरंधर ! हे हे निरंजन निर्विकार नाथ ! हे परम पुरुष परमेश्वर ! हे बल-हीनना बल ! हे भाग्य विधाता ! हे मंगळमूर्ति मोक्षदाता ! हे यतीन्द्र ! हे गणधर-सेवित ! हे राजेश्वर—पूजित ! हे लोकालोक प्रकाशक ! हे विश्वजीववत्सल ! हे शासननायक ! हे सत्त्व शिरोमणि ! हे हित हेतु ! हे क्षमामूर्ति ! हे ज्ञानानंदपूर्ण !

इत्यादि अनेकानेक सत्य विशेषणोथी अलंकृत हे अमारा हृदयना स्वामी अरिहंत प्रभु ! आ जगतमां आप ज एक एवा छो

के आपनुं ध्यान करनार भव्य जीव आपना जेवा बने छे। भमरीना गुंजारवे इयळ भमरी बने छे, एम उक्त विशेषणोथी आपनुं गुंजारव करतां करता हुं पण एवा विशेषणवाळो बनुं, ए प्रार्थना छे.

हे अरिहंत परमात्मा! मारे तुंज एक आधार छे। तारी कृपाथी तारा प्रभावथी ज आ अनंत दुःखमय संसार छूटे अने अनंत सुखमय मोक्ष मळे। संसार राग द्वेष आदि विकारोना कारणे छे, अने आप वीतराग छो निर्विकार छो तेथी आपनुं ज ध्यान धरतां धरता रागद्वेषादि ओछा थता आवे छे। पछी एनो सर्वथा अन्त आवे छे अने एटलेज संसारथी छुटाय छे ने मोक्ष मळे छे। आ तमने ज ध्यानमां लावतां बने छे एटले तमारा प्रभावेज मोक्ष थाय छे।

हे प्रभु! संसारने तमे ठीक ज ओळखाव्यो छे के 'संसार दुःखमय छे' केमके एमां वाते वाते जनमवुं ने मरवुं पडे छे। ऊंचा देवताइ जनममां य मरवु पडे, मरीने हल्का अशुचि स्थानमां जवुं पडे, त्यां गंदो आहार लेवो पडे! वळी संसारमां रोग शोक दारिद्रय पराधीनता अकस्मात् चिंता भय संताप वगेरे वगेरे दुःखो नो पार नथी एटले ज प्रभु! आपेय संसार छोडवानो ज पुरुषार्थ करी आपना आत्माने संसारथी उगारी लीधो।

तेथी आपनी पासे आज मागुं छुं के आवा दुःखमय विटंबना मय अने पराधीनता-लाचारीभर्या संसार पर मने घृणा थाओ; आप मने ग्लानि-उद्वेग-अरुचि करावो अने योग्य पुरुषार्थ करावी मोक्ष अपावो।

हे करुणासिंधु। आपे तो पूर्व भवेथी ज केटली बधी अदभुत धर्मसाधना करी ! हे महावीरदेव ! आपे तो एक लाख वरस मासखमणना पारणे मासखमण कर्या ते ११ लाख ८० हजार ६ सो ४५ पीस्तालीस मासखमण कर्या आनी सामे हुं शुं करुं छु ? खानपाननो ससार मने क्यां खूचे छे ? मने खावुं खोटुं क्यां लागे छे ? प्रभु ! ए कुटिल आहारसंज्ञाथी मने बचाव। तारुं एवुं हु ध्यान करुं के पापी आहारसंज्ञा पर मने घृणा वरसे।

हे त्रिभुवनना नाथ ! तमने जनमतां मोटी साम्राज्ञी दिक्कुमारीओए हुलराव्या, रासगीत गाया, ने ६४ इंद्रोए मेरुशिखर पर तमारा जन्माभिषेक उजव्या ! केटलुं मोटुं पुण्य ! छतां प्रभु ! तमे लेश पण अभिमान न कर्यु केमके आमां कोइ आत्मपुरुषार्थ न देख्यो किन्तु पुण्यकर्मनी लीला देखी। परनी लीलामां शा अभिमान करवा ? त्यारे मने राख ने धूल जेवुं मल्युं छे छतां हुं अभिमानमां मरुं छुं !

हे जगतना नाथ ! आपने जनमथी राजशाही सुखो मल्या, राज्यवैभव मल्या, छता आप एमा लेपाया नहीं, खुशी न मानी, केमके एथी आत्माने कशु हित थवानुं न देख्यु। आनी सामे मने शुं मल्यु छे ? मलवामां कशो भलीवार नहीं छता मारे आसक्तिनो पार नथी। प्रभु ! मारु शु थशे ? मने एवुं बल आप के हु आ दुनियाना सत्ता वैभव अने भोग–सुखोने तुच्छ देखुं, त्यनरनाक देखुं, ने एना पर मने जरा य मान न थाय, राग न

थाय । तुं मारे कोहिनुर हीरा जेवो मल्यो, वळी एवो ज तारो धर्म मल्यो । एनी आगळ आ तुच्छ संपत्ति काचना टूकडा जेवी, एमां हुं शुं काम मोह करुं ? तारी आगळ एने किमती मानुं, तो तो एनो अर्थ ए के में तने ओळख्यो ज नहीं ।

हे जिनेश्वर भगवान ! तमे चारित्र लइ केटली बधी तपस्या करी ! केवा परिषहो ने उपसर्गो सह्या । केवुं दिवस ने रात खडा खडा ध्यान कर्युं । आमां जराय सुकोमळता न राखी, किन्तु अति-सुकोमळ शरीरे भारे सहिष्णुता राखी । आनी सामे मारी पासे शी साधना छे ? नाथ । मने एवी साधनाओ करवानुं बळ आप, सहिष्णु बनाव ।

हे जगदीश । आपे जे नवतत्त्व बनाव्यां एवां कोण बता-वनार छे ? 'छेक पृथ्वीकाय अपकाय अने निगोद सुधीनाय जीव होय छे' ए बतावनार आप ज छो । ए बतावीने एनी रक्षा करवा सुधीनो सर्वांगी अहिंसा-धर्म आपे ज बताव्यो । एटलेज सूक्ष्म जीवोने पण अभयदान देवा सुधीनुं साधु साधु-जीवन आपने त्यां ज मळे छे । तापस थइने जंगलमां रह्या परन्तु जो पाणी वनस्पती वगेरेना जीवोनी हिंसा करवानी छूट छे तो चारित्र क्यां ! तारुं सर्वथा अहिंसानुं जीवन चारित्र जीवन ज छे, अने मानवभवमां ज ए थई शके, एम बतावी अमने आ मानवभवनुं साचुं एज कर्तव्य देखाड्युं ।

हे जगदाधार ! एम आश्रव–संवरनो विवेक पण आपना ज शासनमां मळे छे। 'अविरति ए कर्मबंधनुं कारण छे' एवुं आपना सिवाय कोण बतावे छे ? 'पाप न करीए छतां जो एना त्यागनी प्रतिज्ञा नथी, विरति नथी तो य कर्म बंधाय,' एनो आपना सिवाय बीजा कोई धर्मवाळाने गम नथी। एम समिति गुप्ति पण आपनाज धर्ममां मळे छे। विस्तारथी प्रायश्चित्तनु वर्णन आपने त्यां ज, तेमज कर्मसिद्धान्त, १५८ कर्म, एनी प्रकृति-स्थिति, रस, प्रदेश, एना बंध–उदय उदीरणा–संक्रमण, अपवर्तना निकाचना १४ गुणस्थानक, अनेकांतवाद इत्यादि पर बहु मोटा विस्तारथी विचार आपे ज बताव्यो छे। आ प्रकाश विना कल्याण शे सधाय ?

हे अरिहंत देव ! अज्ञानना अन्धकारमां रखडता अमने आपे आ बधा तत्त्वोनो, सिद्धान्तोनो अने मोक्षमार्गनो सत्य प्रकाश आपी अमारा पर अनहद उपकार कर्यो छे, माटे ज आप खरेखरा धर्मचक्रवर्ती छो। आपनी सेवाना प्रभावे अमने ए प्रकाश मळे, ए मोक्षमार्गनी उच्च भावना मळे अमारी पापी काम–क्रोधादि वासनाओ मटे, आहारादि पापसंज्ञाओ मटे, अमारा रागद्वेष कपाता जाय अने अमने जड पदार्थ यावत् काया पर पण ममता आसक्ति न रहे, तथा केवळ अमारा आत्मामां ज न बनीए, ज्ञानदर्शन चारित्रमां ज तन्मय थईए एज अमारी प्रार्थना छे।

: चैत्यवंदन

(१) श्री ऋषभदेव प्रभुका चैत्यवंदन

आदिदेव अलवेसरुं विनीतानो राय
नाभिराया कुलमंडणो मरुदेवा माय........१
पांचसे धनुषनो देहडी प्रभुजो परमदयाल
चोराशी लाखपूर्वनुं जस आयु विशाल....२
वृषभलंछन जिन वृषधरुंए उत्तमगुणमणिखाण
तस पदपद्म सेवन थकी लहीये अविचलठाण ...३

(२) श्री शांतिनाथप्रभुका चैत्यवन्दन

शांतिजिनेश्वर सोलमा अचिरासुतवंदो
विश्वसेन कुल नभोमणि, भविजन सुखकंदो....१
मृगलंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण
हथिणाउर नयरी धणी प्रभुजी गुणमणिखाण....२
चालिस धनुषनो देहडी ए समचोरस संठाण
वदनपद्म ज्युं चंदलो दीठे परमकल्याण....३

(३) श्री पार्श्वनाथप्रभुका चैत्यवन्दन

जयचिंतामणि पार्श्वनाथ जय त्रिभुवनस्वामी,
अष्ट कर्मरिपु जितीने पंचमी गति पामी....१
प्रभु नामे आनंद कंद सुख संपत्ति लहीये
प्रभु नामे भवभयतणा पातक सब दहीये.... २

ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करी, जपीये पार्श्वनाम
विष अमृत थइ परिणमे पहोंचे अविचलठाम.... ३

(४) श्री नेमिनाथ प्रभुका चैत्यवन्दन

नेमनाथ बावीसमा शिवादेवी माय
समुद्र विजय पृथ्वीपति जे प्रभुना ताय....१
दश धनुषनो देहडी आयु वर्ष हजार
शंखलंछनधर स्वामीजी तजी राजुलनार ...२
शौरीपुरी नगरी भली ब्रह्मचारी भगवान
जिन उत्तम पदपद्मने नमता अविचलठान....३

(५) श्री महावीर प्रभुका चैत्यवन्दन

सिद्धार्थसुत वंदीये त्रिशलानो जायो
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो सुरनरपति गायो....१
मृगपति लंछन पाउले सातहाथनी काय
बहोंतर वरसनुं आउखुं वीरजिनेश्वर राय....२
क्षमाविजय जिनराजनाए उत्तम गुण अवदात
सात बोलथी वर्णव्या पद्मविजय विख्यात....३

(६) श्री पंचपरमेष्ठिका चैत्यवन्दन

बार गुण अरिहत देव प्रणमीजे भावे
सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे....१

आचारज गुण छत्रीस, पचवीस उवज्झाय
सत्यावीस गुण साधुना जपता शिवसुख थाय....२
अष्टोत्तरशत गुणमळी एम समरो नवकार
धीरविमल पंडिततणो नय प्रणमे नित्य सार....३

(७) २४ तीर्थंकर भगवानका चैत्यवन्दन

पद्मप्रभ ने वासुपूज्य दोय राता कहीये
चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ दो उज्वल लहीये... १
मल्लिनाथने पार्श्वनाथ दो नीला निरख्या
मुनिसुव्रतने नेमनाथ दो अंजन सरिखा ...२
सोळे जिन कंचन समा एहवा जिन चोवीस
धीरविमल पंडिततणो ज्ञानविमल कहे शिष्य ३

श्रीसिद्धचक्रजीका चैत्यवन्दन

श्री सिद्धचक्र महामन्त्रराज पूजा प्रसिद्ध
जास नमनथी संपजे संपूरण रिद्ध १
अरिहन्तादिक नवपद नित्य नवनिधि दाता
ए संसार असार सार होवे पार विख्याता २
अमर अचल पद संपजे पूरे मनना कोड
मोहन कहे नवपद भणी वन्दु बे करजोड ३

★

स्तुतियाँ

श्री ऋषभदेवकी स्तुति

'प्रह उठो वंदु ऋषभदेव गुणवंत
प्रभुवेठा सोहे समवसरण भगवंत
त्रण छत्र विराजे चामर ढाले इन्द्र
जिनना गुण गावे सुरनरनारीनावृंद–१

श्री शांतिनाथ भगवानकी स्तुति

गजपुर अवतारा विश्वसेन कुमारा
अवनितले उदारा चक्रवि लच्छीधारा
प्रतिदिवस सवारा सेविए शातिसारा
भवजलधि अपारा पामोये जेम पारा....१

श्री नेमिनाथ प्रभुकी स्तुति

सुर असुरवंदितपायपंकज मयणमल्ल अक्षोभितं
घनसुघनश्यामशरीरसुंदर शंखलंछन शोभितं
शिवादेवी नंदन त्रिजगवंदन भविक कमल दिनेश्वरं
गिरनार गिरिवर शिखर वंदु श्रीनेमिनाथ जिनेश्वरं १

श्री पार्श्वनाथ भगवानकी स्तुति

भीडभंजनपार्श्व प्रभु समरो अरिहंत अनंतनुं ध्यान धरो
जिन आगम अमृत पान करो शासनदेवी सवि विघ्न हरो १

श्री महावीरप्रभुकी स्तुति

जय जय भवि हितकर वीरजिनेश्वर देव
सुरनरना नायक जेहनी सारे सेव
करुणारसकंदो वंदो आनंद आणी
त्रिशला सुत सुन्दर गुणमणि केरो खाणी– १

श्री सिद्धचक्रजीकी स्तुति

प्रह उठी वंदु सिद्धचक्र सदाय
जपीये नवपदनो जाप सदा सुखदाय
विधिपूर्वक ओ तप जे करे थइ उजमाल
ते सवि सुख पामे जेम मयणा श्रीपाल– १

श्री सिद्धाचल महातीर्थकी स्तुति

श्रीशत्रुंजय तीरथ सार गिरिवरमां जेम मेरु उदार ठाकुर राम अपार
मंत्र मांहि नवकार ज जाणु तारा मां जेम चंद्र वखाणु
जलधर जल मां जाणु
पंखीमांहि जेम उत्तम हंस कुलमांहे जेम ऋषभनो वंश
नाभि तणो ए अंश
क्षमावंतमां श्री अरिहंत तपशुरा मुनिवर महंत
शत्रुंजय गिरि गुणवंत १

पच्चक्खाणका कोठा।

मास	सूर्य उ	सू अ.	नवकारसी	पोरसी	साढपोरसी	पूरिमड्ढ
	क. मि.	क. मि.	क मि.	क. मि.	क. मि	क.मि.
जा. १	७-२२	६-५	८-१०	१०-३	११-२४	१२-४४
,, १६	७-२५	६-१५	८-१३	१०-८	११-२९	१२-५०
फेब्रु. १	७-२१	६-२७	८-९	१०-८	११-३१	१२-५४
,, १६	७-१३	६ ३६	८-१	१०-३	११-३०	१२-५४
मार्च १	७-४	६-४२	७-५२	९-५९	११-२६	१२-५३
,, १६	६-५०	६-४८	७-३८	९-५०	११-२०	१२-४९
एप्रील १	६-३८	६-५८	७-२२	९-३९	११-१२	१२-४४
, १६	६-२०	७-०	७-८	९=३०	११-५	१२-४०
मे १	६-८	७-६	६-५६	९-२३	११-०	१२-३७
,, १६	६-०	७-१३	६-४८	९-१९	१०-५८	१२-३७
जुन १	५-५५	७-२०	६-४३	९-१७	१०-५८	१२-३८
,, १६	५-५४	७-२६	६-४२	९-१७	१०-५९	१२-४०
जुला १	५-५८	७-२९	६-४६	९-२१	११-३	१२-४४
,, १६	६-४	७-२८	६-५२	९-२५	११-६	१२-४६
ओग १	६-११	७-२१	६-५९	९-२१	११-८	१२-४६
,, १६	६-१७	७-११	७-५	९-३१	११-८	१२-४४
सप्टे १	६-२३	६-५७	७-११	९-३२	११-६	१२-४०
,, १६	६-२७	६-४२	७-१५	९-३१	११-३	१२-३५
ओ. १	६-३३	६-२७	७-२१	९-३२	११-१	१२-३०
,, १६	६-३८	६-१३	७-२६	९-३२	१०-५९	१२-२६
नवे. १	६-४६	६-१	७-३४	९-३५	११-०	१२-२४
,, १६	६-५५	५-५४	७-४३	९-४०	११-३	१२-२५
डी. १	७-५	५-५२	७-५३	९-४७	११-८	१२-२९
,, १६	७-१५	५-५६	८-३	९-५६	११-१६	१२-३६

गुरुवन्दन विधि

(१) प्रथम दो बार खमासमण देना ।

(२) फिर, खड़े रहकर दोनों हाथ जोड़कर 'इच्छकार सूत्र बोलना ।

(३) पच्चीवार गुरुम० को खमासमण देना ।

(४) अब्भुट्ठिओ सूत्र बोलना ।

(५) खमासमण देकर पच्चक्खाण लेना ।

नोट :—सुबह बारा बजे तक सुहराइ और दोपहर को सुहदेवसि बोलना ।

वर्धमान सेवा केंद्र

एक दृष्टि

उद्देश:

* नवयुवा पीढी का नैतिक आध्यात्मिक जागरण
* धार्मिक शिक्षण शिबिरो का आयोजन
* पीडित-प्रजा एवं प्राणियों को सहायता
* अहिंसा प्रचार एवं सांस्कृतिक नवचेतना
* शिष्ट साहित्य प्रकाशन

दिशा

ज्ञान
शील
वात्सल्य

वैशिष्ट्य

* आपत्त स्थिति में सर्व जन जीवों को सहायता.
* समन्वयवादी आर्यसंस्कृतिका प्रचार-प्रसार.
* नवयुवा पीढीका आदर्श जीवन उत्थान.

सर्वव्यापी एवं सर्वग्राही साहित्य प्रचार—प्रकाशन.

निषेध

संघर्ष
विसंवादिता.
एकांगी दृष्टि.
अज्ञान एवं अविरति.

वर्धमान सेवा केन्द्र
६८ गुलाल वाडी
बंबई ८ तीसरा महल।
टे. नं. ३३०५४९.